इरेडा की हिंदी ई - पत्रिका : एक अभिनव प्रयास

अक्षय क्रांति

इरेडा IREDA
आईएस/आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित

निजी वितरण के लिए

संरक्षक
श्री देबाशीष मजुमदार
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता मंडल
अध्यक्ष
श्री ए.ए.खटाना

सदस्य
श्री अभिलाख सिंह
डॉ. आर.सी.शर्मा
श्री आर.के. विमल
श्री कर्मवीर
श्रीमती संगीता श्रीवास्तव
श्री हरीश कुमार चावला
श्रीमती अलका कुमार

संपादक
श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

संपादन सहयोग
श्री संजय कुमार आर्य
श्री आलर कुल्लू
श्रीमती शशि बाला पपनैं
सुश्री तुलसी

संदेश

नव वर्ष, 2014 के अवसर पर इरेडा की हिंदी ई-पत्रिका के अगले अंक को जारी करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष और गौरव का अनुभव हो रहा है । नव वर्ष पर हम हिंदी के प्रति और अधिक समर्पित होकर कार्य करने तथा हिंदी भाषा के विकास के लिए और अधिक प्रतिबद्ध हों ।

किसी भी 'क्रांति' की सफलता के लिए जन-जन की सहभागिता अनिवार्य है । अक्षय ऊर्जा क्रांति को भी साकार करने के लिए जन जागरूकता परम आवश्यक है ताकि ऊर्जा उत्पादन और उपयोग के वर्तमान पैटर्न में प्रभावी परिवर्तन और सुधार हो सके तथा यह पर्यावरण अनुकूल बन सके । हमें आशा है अक्षय ऊर्जा पर केन्द्रित इरेडा की यह पत्रिका इस दिशा में जागरूकता पैदा कर अपना सबल योगदान देने में सफल हो पाएगी ।

इस ई-पत्रिका के माध्यम से इरेडा कर्मियों को हिंदी में अपनी रचनाओं और लेखों को प्रस्तुत करने, लेखन कौशल, सृजनात्मकता और क्षमता को बढ़ाने तथा उसे और परिष्कृत करने का अच्छा अवसर प्रदान किया गया है । हमारे इस अभिनव प्रयास में अपनी-अपनी रचनाओं के जरिए नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय तथा उपक्रमों के कर्मीगण भी जुड़ रहे हैं । हमारे इस प्रयास से जुड़ने के लिए मैं इरेडा परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ । हमें आशा है कि भविष्य में आप सभी का यह सहयोग और भी बढ़ेगा । मुझे यह भी विश्वास है कि हमारे इस पर्यावरण अनुकूल हिंदी ई-पत्रिका के प्रयास से जुड़कर अन्य उपक्रमों की सहभागिता भी बनी रहेगी ।

भाषा तो विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है, संप्रेषण का जरिया है । यह संप्रेषण सार्थक तभी हो सकता है जब सुनने अथवा पढ़ने वाले कहने अथवा लिखने वाले की बात अर्थपूर्ण तरीके से समझ सकें । भाषाई दृष्टि से हिंदी समृद्ध, सरल और सहज है तथा जनता से अर्थपूर्ण संपर्क के लिए हिंदी अहम भूमिका भी निभा रही है । हम सभी यदि ज्यादा से ज्यादा हिंदी का प्रयोग करें तो हिंदी अपनी यह भूमिका और बेहतर तथा व्यापक तरीके से निभा सकती है । जनता की भाषा के प्रयोग से सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की सफलता को और अधिक कारगर रूप से सुनिश्चित किया जा सकता है ।

दे. मजुमदार

(देबाशीष मजुमदार)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

"मूसी"

ए. के. घिल्डियाल, भारतीय राज्य फार्म निगम लिमिटेड

हाँ, इसी नाम से मैं उसे पुकारता था या यूं कहें कि चिढ़ाता था, गांव की भाषा में "मूसी" का अर्थ होता है छोटी सी चुहिया । गांव के बड़े से दो मंजिले मकान में हम दो परिवार रहते थे, काफी समय पहले की बात है मैं स्कूल में पढ़ रहा था, गांव में बिजली नहीं थी लालटेन या लैम्प की रोशनी में ही पढ़ाई होती थी, हमारा परिवार भले ही आर्थिक रूप से बहुत समृद्ध नहीं था किन्तु सामान्य रहन सहन में कोई कमी भी नहीं थी, गांव में कुछ ही परिवार थे जिनके बच्चों का पढ़ने का कमरा अलग होता था तथा कुर्सी मेज पर बैठ कर पढ़ते थे ।

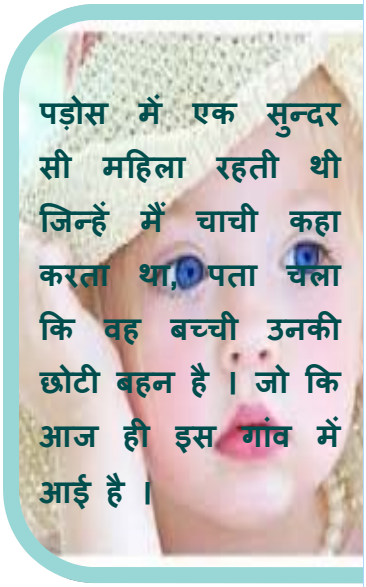

पड़ोस में एक सुन्दर सी महिला रहती थी जिन्हें मैं चाची कहा करता था, पता चला कि वह बच्ची उनकी छोटी बहन है । जो कि आज ही इस गांव में आई है ।

एक दिन स्कूल से लौटा तो देखा आगंन में एक छोटी सी बच्ची खेल रही थी, लगभग तीन साढ़े तीन वर्ष की, सुन्दर कोमल सी उस काया ने बरबस ही मेरा ध्यान खींच लिया, गांव की तो वह थी नहीं, कहीं बाहर से आई थी, मैं उससे कुछ पूछने उसके पास गया तो वह शरमा कर भाग गई, यह तो मालूम हो गया कि यह पड़ोस के परिवार में ही आई है ।

पड़ोस में एक सुन्दर सी महिला रहती थी जिन्हें मैं चाची कहा करता था, पता चला कि वह बच्ची उनकी छोटी बहन है । जो कि आज ही इस गांव में आई है । सुन्दरता का ऐसा मेल, मैं दंग था, किन्तु उम्र में इतना अन्तर, चाची ने खुद ही रहस्य खोला-मेरी सौतेली बहन है, छोटी मां की बेटी ।

न जाने उस छोटी सी आत्मा ने क्या असर डाला मेरी आंखे उसे ही ढूँढ रही थी, बहुत देर तक नहीं दिखी तो मैं मन मार कर चला आया, शाम को खेलते-खेलते अनायास ही मुझसे टकरा गई मैंने पूछा - चाची की बहन हो, हां कहने के बजाय उसने सिर हिला दिया, मैंने कहा फिर तो मेरी मौसी हुई ना, उसने संदेहास्पद दृष्टि मुझ पर डाली और भाग गई, मुझे लगा कि उसे मेरा पूछना अच्छा नहीं लगा, मुझे स्वयं पर बड़ा गुस्सा आया ।

रात में खाना खाने के बाद मैं अपने कमरे में पढ़ने बैठ गया, अचानक मुझे नन्हें पैरों की आहट सुनाई दी, दरवाजे की ओर देखा तो वह दरवाजे की ओट में खड़ी थी, मेरे इशारा करने पर वह नि:संकोच अन्दर

आ गई, उसे पास देखकर ही मेरे अन्दर एक नई ऊर्जा का संचार हो गया, मैंने उसे मौसी कहकर पुकारा तो उसने मेरे गाल पर धीरे से एक चपत लगा दी, उन नन्हें हाथों का स्पर्श मानो मेरे लिए जीवन संजीवनी बन गया, उस दिन मैंने मन लगाकर पढ़ाई की, दूसरे दिन जब मैं पढ़ने बैठा था तो वह स्वयं ही सीधे कमरे में आ गई और इशारे से उसने कुछ पढ़ने के लिए मांगा। मैंने एक पुस्तक उसे पकड़ा दी जिससे वह काफी चित्र आदि देख सकती थी। वह बहुत कम बोलती, किन्तु जितना भी बोलती मुझे लगता की मानों फूल झड़ रहे हों । मैं उसकी आँखो की चंचलता तथा होठों की मुस्कराहट ही देखता रह जाता । तीसरे दिन वह चुपचाप कमरे में आई और कुर्सी पर मेरे पीछे चढ़ गई, अब मैं उसे "मौसी" न कहकर "मूसी" नाम से चिढ़ाने लगा था किन्तु वह थी कि चिढ़ती ही न थी, मानो उसे "मौसी" या "मूसी" किसी शब्द से कोई भी फर्क नहीं पड़ता था, वह शब्दों के इस फेर से कोसों दूर थी ।

मैं उसकी आँखो की चंचलता तथा होठों की मुस्कराहट ही देखता रह जाता ।

अब मुझे उसकी आदत पड़ चुकी थी, जब तक वह नहीं आती मेरा मन पढ़ाई में न लगता, किन्तु वह रोज आकर मेरी कुर्सी पर चढ़कर मेरी पीठ पर झूल जाती, उसकी बाहों का आलिंगन मुझे जीवन में कुछ करने की प्रेरणा देता सा प्रतीत होता, मैं उसकी आँखों की भाषा समझने लगा था, उसकी आँखो में भरी शरारत, उसके मन की खुशी को जाहिर करती थी ओर मुझे एक सुकून देती थी ।

एक दिन स्कूल से घर पहुंचा तो आदतन सर्वप्रथम उसे ही तलाशा, कहीं नहीं दिखी तो लगा कि शायद बच्चों के साथ खेलने चली गई होगी, रात में पढ़ने बैठा तो कान उसके पैरों की आहट सुनने के लिए आतुर थे, पुस्तक खोलकर बैठा तो था किन्तु बिना उसे देखे पढ़ने को जी नहीं कर रहा था, वह नहीं आई, मैं उस दिन पढ़ नहीं पाया ।

सवेरे उठते ही पहले मैंने चाची से ही पूछा - वो दिखाई नहीं दे रही ! वे बोली - वह तो चली गई । मेरी मानो धड़कन रूक गई, आँखो के आंसू मैंने बाहर नहीं आने दिए, बोला क्यों जाने दिया आपने कुछ दिन और रह ने देती । वे बोली-उसकी मां उसके लिए परेशान थी, फिर वापस घर तो जाना ही था । कितने दिन यहां रहती । मैं निरूत्तर था किन्तु बहुत दिनों तक मेरा मन उदास रहा ।

समय बीतता गया, मैं उच्च शिक्षा के लिए गांव छोड़कर शहर आ गया, फिर शिक्षा, नौकरी, आदि के चक्कर में ऐसा डूबा कि पिछला समय स्मृति पटल से ओझल सा हो गया, अब मेरी नौकरी लग चुकी थी परिवार के सभी सदस्य शहर में ही थे अत: गांव से नाता लगभग टूट सा गया था । काफी समय बाद गांव जाने का मौका मिला, पुराने घर के आंगन में पहुँचते ही अनायास ही वह चेहरा मेरे स्मृति पटल पर आ गया, चेहरा कुछ धुंधला सा था किन्तु उसकी चंचल आँखों की सुन्दरता तथा होठों की मुस्कुराहट पूरी तरह ताजा थी, मेरे कमरे में कुर्सी - मेज अब भी वैसे ही रखे थे, जैसे ही मैं कुर्सी पर बैठा उसकी बाहों के आलिंगन की कल्पना से ही मन प्रफुल्लित हो गया ।

इससे अधिक मुझसे रहा नहीं गया, तुरंत चाची के पास पहुंचा और पूछा वो कैसी है अब तो बहुत बड़ी हो गई होगी, शादी-वादी भी हो गई होगी (गांव में शादी कुछ जल्दी हो जाती है) चाची चुप रह गई । मैं अपने सवालों का जवाब तुरंत चाहता था, मैंने पुन: पूछा तो चाची कुछ रूआंसी होकर बोली - वो अब इस दुनिया में नहीं है । मैंने कहा - क्या मतलब ! मुझे लगा कि चाची मेरे सवालों को समझी नहीं । किन्तु उन्होंने पुन: दोहराया कि यहां से जाने के बाद उसकी तबीयत खराब रहने लगी थी, काफी इलाज करवाया किन्तु वह दो वर्ष से अधिक नहीं जी पाई । मुझे अपने गांव आने पर बहुत क्षोभ था, न आता तो शायद यह कटु सत्य सुनने को नहीं मिलता, कम से कम मेरी कल्पना में ही सही वह जिन्दा तो रहती ।

उसके बाद भी मैं गाँव के उस मकान में गया किन्तु पुन: मैं उस कुर्सी पर नहीं बैठा जिस पर खड़े होकर वह मेरी पीठ पर झूलती थी । आज भी जब वह निश्छल चेहरा, मुस्कराती मासूम आँखें याद आती हैं तो अनायास ही आंसू निकल आते हैं । उससे तो मेरा नजदीक का कोई रिश्ता भी नहीं था फिर उस आत्मा से ऐसा लगाव क्यों, मुझे आज भी अपने इस सवाल का जवाब नहीं मिला । सोचता हूँ, क्या वह निश्छल आत्मा ही परमात्मा का रूप थी या परमात्मा स्वयं ही धरती पर ---------- ।

उसके बाद भी मै गांव के उस मकान में गया किन्तु पुन: मैं उस कुर्सी पर नहीं बैठा जिस पर खड़े होकर वह मेरी पीठ पर झूलती थी ।

कार्य-कौशल बढाएं तथा उत्कृष्टता का लक्ष्य पाएं

कृपाराम लहकरा, बीएचईएल

कोई ही ऐसा व्यक्ति या संगठन विशेष होगा जो अपने बेहतर अर्थात उत्कृष्ट जीवन की चाह न रखता हो । लेकिन चाह रखने मात्र से काम नहीं चलता और न ही किसी ध्येय को प्राप्त किया जा सकता । चाहे हमारा व्यक्तिगत जीवन हो या कार्यालयीन जीवन, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संबंधित कार्यों/गतिविधियों के श्रेष्ठ प्रबंधन की आवश्यकता होती है । श्रेष्ठ प्रबंधन के बहुत से सूत्र हमें गीता से मिले हैं जिन पर आज हमें लच्छेदार अंग्रेजी में ढेरों साहित्य उपलब्ध हैं ।

कुछ वर्षों पहले बीएचईएल में एक नारा काफी प्रचलित रहा वह था "उत्कृष्टता की ओर अग्रसर" । विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए बीएचईएल ने उत्कृष्टता पुरस्कार योजना लागू की थी जिसका आधार सूत्र भी गीता का एक पद है **"योग: कर्मसु कौशलम"** कर्म में कौशल का नाम योग है । यह योग की एक परिभाषा है ।

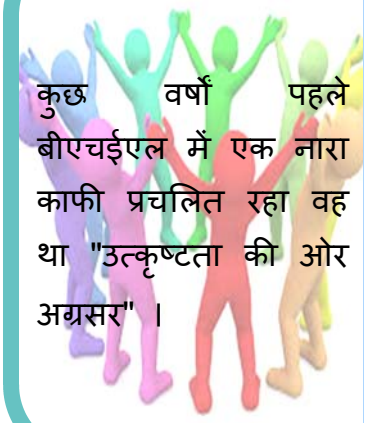

कुछ वर्षों पहले बीएचईएल में एक नारा काफी प्रचलित रहा वह था "उत्कृष्टता की ओर अग्रसर" ।

शारीरिक, मानसिक और भावात्मक - इस त्रिविध स्वास्थ्य के संदर्भ में ही कार्य कौशल को देखा जा सकता है, समझा जा सकता है । काम करना अनिवार्य नहीं है। प्रयोजन के साथ कार्य आता है । प्रयोजन समाप्त, कार्य समाप्त । कार्य के प्रति प्रवृत्ति के लिए प्रयोजन मुख्य होता है । हमारा प्रयोजन क्या है ? प्रयोजन है जीवन की अनिवार्य आवश्यकताएं- रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा आदि-आदि । इसी के साथ कार्य के विस्तार के साथ-साथ वर्तमान युग में औद्योगिक और व्यावसायिक विस्तार हुआ और इसने जन्म दिया कार्य की क्षमता और कार्य-कौशल अवधारणा को ।

यहाँ कौशल की चर्चा से पूर्व अच्छा होगा कि हम कौशल शब्द को समझें । कार्य का कौशल वह है, जो दूसरे के हित को बाधित न करें, जो लाभ दें, हानि न पहुँचाएं । इन दिनों हमारा कार्य-कौशल बढ़ा है, किन्तु उसी के साथ मानसिक अस्त-व्यस्तता भी बढ़ी है । कौशल यदि हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है, मानसिक विक्षेप बढ़ा रहा है तो उसे कार्य-कौशल और कार्य-क्षमता नहीं कहा जा सकता ।

एक संतुलन होना बहुत जरूरी है । कार्य में दक्षता बढ़े तो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी उसी अनुपात में बढ़े । आज विकास और कार्य-कौशल की अवधारणा मात्र पदार्थ एवम् पदार्थ-निर्माण पर अटक गई है । पदार्थ का विकास अधिकाधिक होना चाहिए । हर दिशा में विकास और कार्य-कौशल बढ़ रहा है लेकिन इंसान अच्छा बने इस प्रयास में कमी देखी जा सकती है ।

आदमी अपने आप में इतना पीड़ित और अशांत है कि उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती । भावात्मक स्वास्थ्य के अभाव में कार्य-कौशल की संभावना नहीं की जा सकती । भावात्मक स्वास्थ्य का कोई पैमाना नहीं है, किन्तु व्यक्ति के व्यवहार से हम उसे परख सकते हैं । भावात्मक स्वास्थ्य की चार कसौटियां हैं ।

1) उपशम - मन की शांति
2) मृदुता या विनम्र व्यवहार
3) मृदुता या निश्छल व्यवहार
4) संतोष

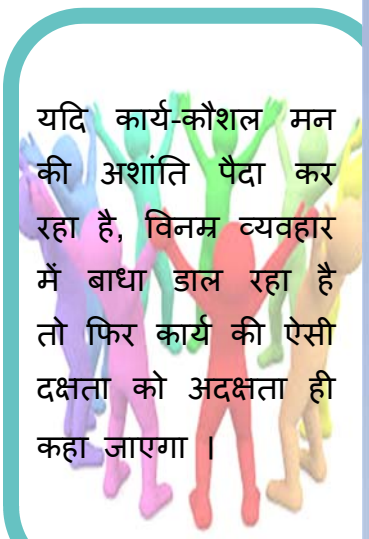

यदि कार्य-कौशल मन की अशांति पैदा कर रहा है, विनम्र व्यवहार में बाधा डाल रहा है तो फिर कार्य की ऐसी दक्षता को अदक्षता ही कहा जाएगा ।

यदि कार्य-कौशल मन की अशांति पैदा कर रहा है, विनम्र व्यवहार में बाधा डाल रहा है तो फिर कार्य की ऐसी दक्षता को अदक्षता ही कहा जाएगा । कार्य-कौशल की पहली परिभाषा यह होनी चाहिए - जो जीवन के किसी अन्य पक्ष को प्रभावित न करें, बाधित व पीड़ित न करें वह कार्य-कौशल है । इस संदर्भ में निम्न बातों को अपनाते हुए कार्य-कौशल बढ़ाया जा सकता है और उत्कृष्टता का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है ।

1) **किसी भी कार्य को योजनापूर्वक करें** - कार्य-कौशल के साधनों में महत्वपूर्ण है कि किसी भी कार्य को योजना-पूर्वक करना । कार्य-कौशल के लिए लेनिन का एक प्रसिद्ध सूत्र याद आ रहा है - चिंतन, निर्णय और कार्यान्वयन में लम्बा अंतराल न हो, उनमें उचित सामंजस्य रहे । चिंतन आज किया, निर्णय एक वर्ष बाद और कार्यान्वयन पांच वर्ष बाद, यह बात नहीं होनी चाहिए । संस्कृत साहित्य में इसे दीर्घसूत्रता कहा गया है । जो काम जिस समय करना चाहिए, उस समय न करके लम्बे अंतराल के बाद किया जाए तो असफलता ही हाथ लगेगी ।
2) **कोई कार्य हड़बड़ी में न करें** - कार्य-कौशल का दूसरा मुख्य सूत्र है कि हड़बड़ी में कोई काम न करें, चिंतन और विवेकपूर्वक करें ।

3. **कार्य को एकाग्रता से करें** - कार्य-कौशल का एक महत्वपूर्ण सूत्र है - एकाग्रता का विकास । एक विचार, एक विकल्प, एक कार्य लें और उसी में तन्मय बन जाए, उसी में पूरी तरह चित व मन को लगा दें । हमारे अंत:करण की सारी प्रवृत्तियां उसके लिए समर्पित हो जाएं । जब तक उस कार्य के लिए समर्पण नहीं होता, तब तक कार्य-कौशल नहीं बढ़ता । एकाग्रता के लिए साधना और अभ्यास जरूरी है । अभ्यास होता है तो एकाग्रता बढ़ जाती है ।
4. **वर्तमान में जीना सीखें** - "भूत-भविष्य को मार भगाई, वर्तमान में जीओ भाई" वर्तमान में जीने का तात्पर्य वर्तमान का अनुभव, वर्तमान का जीवन और वर्तमान का श्वास । हम श्वास लेते हैं तो कभी अतीत में नहीं लेते, न भविष्य में लेते हैं । अतीत और भविष्य की चिंता से हमें मानसिक अशांति तो होती है बल्कि शारीरिक विकार भी पैदा हो जाते हैं जिससे हमारे कार्य-कौशल में कमी आती है । जैन साहित्य में दो शब्द आते हैं - द्रव्य क्रिया और भाव क्रिया । द्रव्य क्रिया का तात्पर्य है - मुर्दा क्रिया, मृत क्रिया । भाव क्रिया का तात्पर्य है जीवित क्रिया, प्राणवान क्रिया । वर्तमान में जो जिया जा रहा है केवल उसी का अनुभव करते रहें यह कार्य-कौशल का महत्वपूर्ण सूत्र है ।

अंत में सार यह उभर कर आता है कि हमारे लक्ष्य पवित्र हों, हमारा कार्य-कौशल इस प्रकार विकसित हों जो किसी को अकुशल न बनाए, पीड़ा न पहुंचाए, दूसरों के हितों पर कुठाराघात न करे । हमारा सारा प्रयत्न और पुरुषार्थ इस दिशा में चले कि हमारा अपना कार्य किसी दूसरे के कार्य में बाधा न पहुंचाए। कार्य-कौशल का हृदय यही है ।

चिंतन करें

शंकर दत्त, पीईसी लिमिटेड

एक राजा था । उसके राज्य में सब प्रकार से सुख शांति थी । किसी प्रकार का कोई वैर-विरोध नहीं था । जनता हर प्रकार से सुखी थी । परन्तु राजा को एक बहुत बड़ा दुख था कि उसकी कोई संतान न थी । उसे अपना वंश चलाने की तथा अपने उत्तराधिकारी की चिंता खाए जा रही थी । मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे में जाकर माथा टेका । कई तीर्थ स्थानों की यात्रा की, परन्तु कोई लाभ न हुआ । संतान की कमी उसे दिन ब दिन खाए जा रही थी ।

बहुत सोच-विचार के पश्चात् उसने अपने राज्य के सभी विद्वानों, पंडितों को बुलवाया और उनसे संतान प्राप्ति का उपाय ढूंढ़ने को कहा । सभी विद्वानों ने विचार किया । राजा की जन्म कुंडली का गहन विश्लेषण किया । अंत में वे सभी एक मत से एक निष्कर्ष पर पहुँचे । उन्होंने राजा से कहा कि यदि कोई ब्राह्मण का बच्चा अपनी खुशी से देवता को बलि दे तो आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है । राजा ने विद्वानों की बात सुनी । उसने सारे राज्य में घोषणा करवा दी कि यदि कोई ब्राह्मण का बच्चा अपनी इच्छा से खुशी-खुशी बलि देगा तो उसके घर वालों को बहुत सा धन दिया जाएगा । राजा के राज्य में एक बहुत ही गरीब ब्राह्मण था । कई दिन फाके में ही गुजर जाते थे । उसके चार लड़के थे । बड़े तीन लड़के तो अपना काम-धंधा करते थे और अपने परिवार को आर्थिक सहयोग देते थे परन्तु जो सबसे छोटा लड़का था वह कोई काम नहीं करता था । उसका सारा ध्यान हमेशा भगवान भक्ति में लगा रहता था । उसका सारा दिन सद्कर्म करते हुए भगवान का स्मरण करते ही बीत जाता था । उसके पिता ने भी घोषणा सुनी और सोचा, यह लड़का निठल्ला है और कोई काम-धंधा भी नहीं करता । इसको बलि के लिए भेज देते हैं । राजा से धन मिल जाएगा तो घर की हालत कुछ सुधर जाएगी । ब्राह्मण अपने सबसे छोटे लड़के को लेकर राजा के पास पहुँचा । राजा ने उस लड़के से पूछा, क्या तुम बिना किसी दबाव के, अपनी मर्जी से, अपनी खुशी से बलि देने को तैयार हो ? जी महाराज ! लड़के ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया, यदि मेरी बलि देने से आपको संतान की प्राप्ति होती है तो मैं खशी से अपनी बलि देने को तैयार हूँ । देकर विदा किया । ठहराया गया ।

उसने सारे राज्य में घोषणा करवा दी कि यदि कोई ब्राह्मण का बच्चा अपनी इच्छा से खुशी-खुशी बलि देगा तो उसके घर वालों को बहुत सा धन दिया जाएगा ।

लड़के को अतिथि गृह में ठहराया गया । हर प्रकार से उसका ख्याल रखा गया । अंत में उसकी बलि देने का दिन भी आ गया । राजा ने लड़के को बुलाया और कहा, आज तुम्हारी बलि दे दी जाएगी । अगर तुम्हारी कोई आखिरी इच्छा हो तो बताओ हम उसे पूरी करेंगे। मुझे कुछ भी नहीं चाहिए । ब्राह्मण पुत्र ने कहा, बस मैं बलि देने से पहले नदी में स्नान करके पूजा करना चाहता हूँ । राजा यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और बोला, ठीक है । हम भी तुम्हारे साथ नदी तक चलेंगे । उस लड़के ने नदी में स्नान किया । फिर नदी किनारे की रेत को इकट्ठा किया और उसकी चार ढेरियाँ बना दी । उसने चारों ढेरिओं की ओर देखा । फिर एक ढेरी को अपने पैर से गिरा दिया । फिर उसी प्रकार से दूसरी ढेरी को भी गिरा दिया । फिर तीसरी ढेरी को भी गिरा दिया उसके वह चौथी ढेरी के पास गया । उसके चारों ओर तीन बार चक्कर लगाया । हाथ जोड़कर उसको माथा टेका । उसकी वंदना की और राजा के पास बलि के लिए आ गया । राजा उसका यह सारा करतब बड़े ही कौतुहल से देख रहा था । पहले तो राजा ने सोचा कि बालक है । रेत से खेल रहा है । परन्तु जब राजा ने देखा कि उसने चौथी ढेरी को हाथ जोड़कर प्रणाम किया है तो राजा को इसका रहस्य जानने की इच्छा हुई । राजा ने बालक से पूछा, बालक, तुमने रेत की चार ढेरियाँ बनाई । फिर उनमें से तीन को तोड़ दिया और चौथी को प्रणाम किया । इसका क्या रहस्य है ? पहले तो बच्चे ने कोई उत्तर नहीं दिया, परन्तु राजा के दोबारा पूछने पर लड़के ने कहा, राजन, आपने बलि के लिए मुझे कहा है । मैं बलि देने के लिए तैयार हूँ । आप अपना काम कीजिए । आपको इस बात से क्या लेना कि मैंने रेत की वो ढेरियाँ क्यों तोड़ी हैं । राजा को बालक से ऐसे उत्तर की आशान थी । राजा ने उससे कहा, बालक, हमने तुम्हारे पिता को तुम्हारी कीमत देकर तुम्हें खरीदा है । तुम हमारे खरीदे हुए गुलाम हो । इसलिए हमारे हर प्रश्न का उत्तर देना और हमारी हर बात को मानना तुम्हारा धर्म बनता है । हे राजन, जब आप जिद कर रहे हैं तो सुनिए! लड़के ने उत्तर दिया, जब कोई बच्चा पैदा होता है तो सबसे पहले उसके माता-पिता उसकी रक्षा करते हैं । अगर वह आग के पास जाने लगता है तो उसको उससे बचाते हैं । उसकी हर प्रकार से रक्षा करने की जिम्मेवारी उनकी होती है । लेकिन यहाँ तो मेरे पिता ने ही धन के लालच में मुझे बलि देने के लिए आपके पास बेच दिया । इसलिए पहली

उसकी वंदना की और राजा के पास बलि के लिए आ गया। राजा उसका यह सारा करतब बड़े ही कौतुहल से देख रहा था ।

ढेरी जो उनके नाम की बनाई थी वह मैंने ढहा दी । लड़के ने आगे कहा, दूसरी जिम्मेदारी राजा पर होती है अपनी प्रजा की रक्षा करने की । आपने मुझे अपनी संतान प्राप्ति के लिए बलि देने के लिए खरीद लिया । तब आपसे क्या प्रार्थना करता । इसलिए दूसरी ढेरी जो मैंने आपके नाम की बनाई थी वह भी तोड़ दी । जीवों की रक्षा करने का तीसरा भार देवी-देवताओं का होता है । बालक ने तीसरी ढेरी का रहस्य बताते हुए कहा, लेकिन यहाँ तो देवता स्वयं ही मेरी बलि लेने को तैयार बैठा है तो इससे क्या प्रार्थना करता ? इसलिए मैंने तीसरी ढेरी भी तोड़ दी । लेकिन चौथी ढेरी का क्या रहस्य है ? राजा ने पूछा और अंत में सहारा होता है भगवान का, ईश्वर का । बच्चे ने रेत की ढेरियों का रहस्य खोलते हुए कहा, मेरी बलि दी जानी थी । सो मैंने अंत में ईश्वर से प्रार्थना की। प्रभु की पूजा-अर्चना करके उनसे रक्षा करने की प्रार्थना की । अब वही मेरी रक्षा करेंगे। वही होगा जो ईश्वर को मंजूर होगा । मैं बलि देने के लिए तैयार हूँ ।' इतना कहकर वह बालक राजा के पास जाकर सिर झुका कर खड़ा हो गया । राजा उस छोटे से बालक की इतनी ज्ञान की बातें सुनकर सन्न रह गया । राजा ने सोचा मैं इस बालक की बलि दे दूँगा । ब्राह्मण हत्या भी हो जायेगी । फिर पता नहीं मुझे जो संतान प्राप्त होगी वो कैसी होगी । प्रजा का ख्याल रखने वाली होगी या नहीं । कहीं मेरा और वंश का नाम ही न डुबो दे । यह बालक गुणवान है । ईश्वर का भक्त है । सब प्रकार से मेरे लायक है । क्यों न मैं इसे ही गोद ले लूँ और इसे ही अपना पुत्र बना लूँ । इतना विचार करते ही उसने उस बालक की बलि देने का कार्यक्रम रद्द कर दिया और उस बालक को गोद ले लिया। कहते हैं उस बालक में अच्छे गुण होने के कारण उसने कई सालों तक राज्य किया और हर प्रकार से प्रजा की रक्षा की । उसके राज्य में किसी को किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं था ।

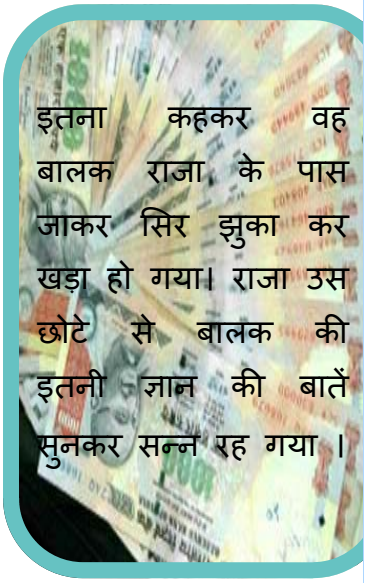

कविता

अलका कुमार, इरेडा

शोभित है ज़िंदगी, धरती की धार पर
इस हरित धारा पर, ऊर्जा से भरपूर है
हरित ऊर्जा से यू सुसज्जित ये खूब है
हरित ऊर्जा के भण्डार का, खजाना ये खूब है
जल वायु और सौर ऊर्जा, है इनके अत्यंत स्रोत
ले अमल में इनको, अगर बचाना है ये धरा अनमोल
अद्भुत है खजाने प्रकृति के, अगर कर ले मनुष्य इनका सदुपयोग
ये झोखा जो हवा का है, ये जो तरंग में जलधारा है
अद्भुत किरणे जो फैलाती जीवन की धारा है ।।
समझ ले इनका जो इशारा है, कर प्रयोग इन्हीं का
अपने यंत्र मंत्र से, छुपा ऊर्जा का अनमोल खजाना है ।।
प्रकृति जिंदगी से है, जिंदगी बनी भी प्रकृति से है
चलता रहे ये विचित्र खेल यूं ही, इसका भी अमल जिंदगी से है ।
रक्षा कर इस धरा की, सौंपना इसको नई जिंदगी को है ।
इस प्रकृति से बना मनुष्य महान,
फिर क्यों कर रहा प्रकृति का सर्वनाश ।
खुद को बचा, हर जिंदगी को बचा
करके हरित ऊर्जा का सम्मान, जीने दे जीवन को और भी ।
कर ले संयम में अपना ये विषकृत, घटता जीवन का चक्र ये
है इशारा प्रकृति का हर पल, संभल जरा, ना कर इसको तू तंग
मुक्त खेल प्रकृति से, कर ले इस हरित ऊर्जा का प्रयोग
अच्छे के बदले अच्छा देना, सीख प्रकृति का ये खेल ।।

नहीं सीखा अब भी अगर, प्रकृति में सब जाएगा बदल
जी ना पायेगा फिर तू इस प्रकृति में,
मिट जाएगा अंश तेरा इस प्रकृति से
हरित प्रकृति और ये हरित ऊर्जा
है ये इस धरा के जीवन दायक
सीख प्रकृति से लेना देना
सिखा रहे ये, जीवन का मूल मंत्र
प्रकृति का आहार प्रकृति
मत दे आहार आप्राकृतिक
संतुलन बिगड़ गया अगर
हो जायेगी विनाश जिंदगी
अब संभल जरा, और कर ले प्रण
करके हरित ऊर्जा को ही खर्च,
बना धारा को शोभित हरदम
फिर रहेगा प्रकृति और जिंदगी का, ये खूबसूरत संग ।।

हरित प्रकृति और ये हरित ऊर्जा है ये इस धारा के जीवन दायक
सीख प्रकृति से लेना देना सिखा रहे ये जीवन का मूल मंत्र

अक्षय ऊर्जा से देश विकास

गाँव-गाँव बिजली, घर-घर प्रकाश !

कर्मचारियों की आदतों, उनके व्यक्तित्व और निष्पादन क्षमता का पारस्परिक संबंध - एक विश्लेषण

हीरा वल्लभ, नराकास

हम जिस किसी संगठन में काम करते हैं उसके प्रति हमारा लक्ष्य होना चाहिए संबंधित संस्थान के लिए अपनी संपूर्ण क्षमताओं का इस्तेमाल । क्षमताओं का बेहतर प्रयोग तभी हो सकता है जब हम अपने अंदर अच्छी आदतों का विकास करें । हमारे शास्त्र, वेद, उपनिषद् और अन्य धार्मिक ग्रंथ हमें अच्छी आदतों के विकास के संबंध में बीज मंत्र बताते हैं कि हमें मनसा, वाचा और कर्मणा शुद्ध रहना चाहिए । मनसा, वाचा और कर्मणा शुद्धता से तात्पर्य है कि हम मन, वाणी और कर्मों से अच्छे बने रहें । हमारी नीयत नेक हो, हम अपने सहकर्मियों, साथियों और अन्य लोगों के साथ अच्छा बरताव करें और हमारे कर्म अच्छे हों । इस बीज मंत्र पर चलने वाला हमेशा अपने अंदर अच्छी आदतों का विकास होता पायेगा ।

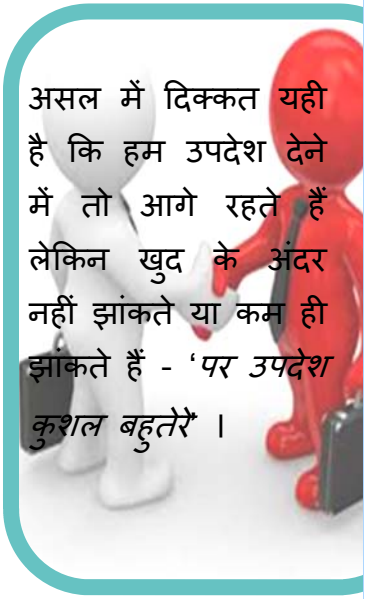

असल में दिक्कत यही है कि हम उपदेश देने में तो आगे रहते हैं लेकिन खुद के अंदर नहीं झांकते या कम ही झांकते हैं - '*पर उपदेश कुशल बहुतेरे*' । सुप्रसिद्ध लेखक सरदार पूरन सिंह ने एक बार कहा था *आचरण की सभ्यतामय भाषा सदा मौन रहती है* । अर्थात आदमी खुद चुप रहकर खुद को ठीक रखे तो इसका प्रभाव खुद-ब-खुद दूसरों पर पड़ता है । इसको हम एक छोटे से उदाहरण से स्पष्ट कर सकते हैं कि मान लिया जाए हम बच्चे से कहें धूम्रपान नहीं करते, लेकिन उसके सामने खुद ऐसा करें । इससे इतर हम अगर यह सब करते ही नहीं हैं तो इसका ज्यादा असर बच्चे पर पड़ेगा । अच्छी आदते घर से शुरू होकर, समाज, दफ्तर और उससे आगे तक हमें हमेशा हमारा फायदा दिलाती हैं ।

कहा जाता है कि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन निवास करता है । इसी तरह यह भी कहा जाता है कि स्वस्थ वातावरण ही उन्नति का द्योतक होता है । स्वस्थ वातावरण तभी बनेगा जब उस माहौल में रहने वाले लोग

एक दूसरे का सम्मान करेंगे, खुद की आदतों को सुधारेंगे और उस संस्था की तरक्की के लिए अपने स्तर पर हर वह कार्रवाई करेंगे जो औद्योगिक संगठन और लोगों की उन्नति में जरूरी होती है ।

औद्योगिक संगठन किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत आधार प्रदान करते हैं । औद्योगिक संगठनों में प्रयोग होने वाले समस्त संसाधनों में मानव संसाधन अर्थात उसमें काम करने वाले कर्मचारी महत्वपूर्ण और निर्णायक होते हैं । इन संगठनों का सफल संचालन वहां कार्यरत कर्मचारियों की कुशलता और कार्यक्षमता पर आधारित होता है । कुशलता और कार्यक्षमता का स्रोत हमारा आचरण और व्यवहार होता है । जाहिर है औद्योगिक संगठनों में मानवीय संबंध पूरी एक ऐसी किताब है जिसके बिना कभी कुछ नहीं कराया जा सकता । लोगों के साथ संतोषजनक रूप से काम करना प्रबंधन के काम का सिर्फ एक हिस्सा नहीं है वरन् सारा काम इसी पर टिका है । क्योंकि सभी उद्योगों में मशीन, माल या दूसरी चीज़ों के साथ कोई भी काम लोगों के माध्यम से ही किया जा सकता है । तीन 'एम' अर्थात मनी, मेटीरियल और मशीन औद्योगिक संगठन के लिए महत्वपूर्ण संसाधन होते हैं । लेकिन इन्हें परिणामों तक पहुंचाने का कार्य कर्मचारी (man) ही करते हैं । जो संगठन दूर अंदेशी रहकर कर्मचारियों के ज्ञान, उनकी विशिष्टताओं, उनके आचरण को अनुकूल सांचे में ढालने के प्रति सजग रहते हैं वही सफलता की ऊंचाइयों को छूते हैं । अंग्रेजी में एक पुरानी कहावत है --

Where the vision is one year
Cultivate flowers
Where the vision is ten years
Cultivate trees
Where the vision is eternity
Cultivate people अर्थात

जहाँ दूरअंदेशी एक साल के लिए हो तो फूल लगाइये
जहाँ दूरअंदेशी दस साल के लिए हो तो पेड़ लगाइये

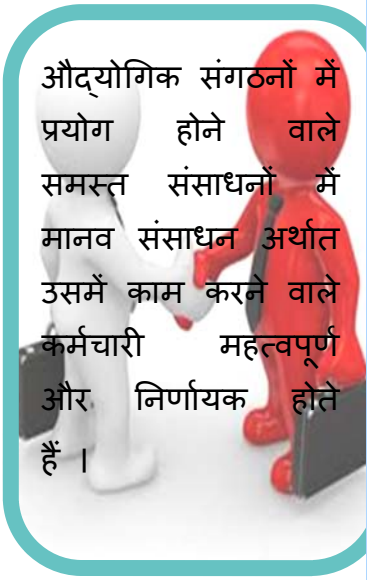

औद्योगिक संगठनों में प्रयोग होने वाले समस्त संसाधनों में मानव संसाधन अर्थात उसमें काम करने वाले कर्मचारी महत्वपूर्ण और निर्णायक होते हैं ।

जहाँ दूरअंदेशी अनंत काल के लिए हो तो लोगों का विकास कीजिए । औद्योगिक संगठन में 500 आदमी हों, 5000 आदमी हों, 50,000 हों या इससे अधिक अगर कामकाज ठीक से चलाना है तो बहुत जरूरी है प्रबंधन उनसे निभाना जानता हो ।

व्यक्तिगत संपर्क का महत्व

वातानुकूलित कमरे में बैठकर और संचार माध्यम या किसी अन्य तरीके से कर्मचारियों की रिपोर्ट लेना और आस पास होने वाले घटनाक्रम को जानना अलग बात है और कार्यस्थल पर स्वयं उपस्थित रहकर स्थिति को समझना और निर्देश देना अलग बात । महान जनरल रोमेल की सफलता का मुख्य कारण यह था कि वे हमेशा कार्यस्थल पर स्वयं उपस्थित होकर निर्देश देते, बातों की पुष्टि करते, समस्याएं सुलझाते और देखते कि काम कैसा चल रहा है । रोमेल का यह तरीका इतना सफल रहा कि किसी भी औद्योगिक संगठन या कारोबार में इसे अपनाया जाए तो आशातीत परिणाम सामने आ सकते हैं । लोगों के बीच खुद उपस्थित होकर काम करने का कोई विकल्प नहीं है । लोग अधिकांशतः उनको नापसंद करते हैं जिन्हें वे ठीक से जानते नहीं हैं । पर एक बार जान पहचान हो जाने पर हालात बदल जाते हैं । कर्मचारियों में अच्छी आदतों का विकास करने की पहली शर्त है कि पहले उनके दिलों में घर किया जाए । ऐसे किसी भी बरताव से बचा जाए जिससे वह अपने को उपेक्षित महसूस करने लगे । अतः संवेदनशीलता का ध्यान रखना बहुत जरूरी है ।

महान जनरल रोमेल की सफलता का मुख्य कारण यह था कि वे हमेशा कार्यस्थल पर स्वयं उपस्थित होकर निर्देश देते, बातों की पुष्टि करते, समस्याएं सुलझाते और देखते कि काम कैसा चल रहा है ।

कर्मचारियों के प्रति संवेदनशील, व्यवहार-कौशल और धैर्यपूर्ण होने के अतिरिक्त इस बात पर दृढ़ रहना जरूरी है कि काम ठीक प्रकार से हो । अच्छे व्यवहार के साथ कर्मचारियों को यह जताना भी जरूरी है कि उनसे काम का उच्च स्तर अपेक्षित है और उस पर उनके साथ कोई समझौता नहीं और अगर इस पर अमल नहीं करते तो उन्हें पता होना चाहिए कि आप कड़ी कार्रवाई करेंगे।

सकारात्मक नजरिया

प्रबंधन का एकमात्र काम निर्देश देना नहीं है वरन् उसे साथ-साथ लोगों का विकास करना होता है ।

एक अधिकारी का मुख्य काम यही है कि वह अपने साथ काम करने वाले लोगों में अच्छी आदतों का विकास करे, उनकी सहायता करे । यदि यह काम प्रभावशाली ढंग से कर पाता है तो इससे केवल उसके अपने काम ही बेहतर नहीं होंगे बल्कि उसके पास प्रशिक्षित और कुशल कर्मचारियों का पूरा दल होगा जो उसके प्रति पूरी निष्ठा से काम करेगा । इसके लिए सबसे पहले कर्मचारियों का नजरिया, ठीक करना जरूरी है । उनमें सबसे पहले यह भावना लानी होगी कि हमारे अंदर जो चीज है वहीं हमें ऊपर की ओर ले जाती है और वह हमारा नजरिया है ।

एक आदमी मेले में गुब्बारे बेचकर अपनी गुज़र-बसर करता था । उसके पास लाल, नीले, पीले, हरे-चारों रंग के गुब्बारे थे ।

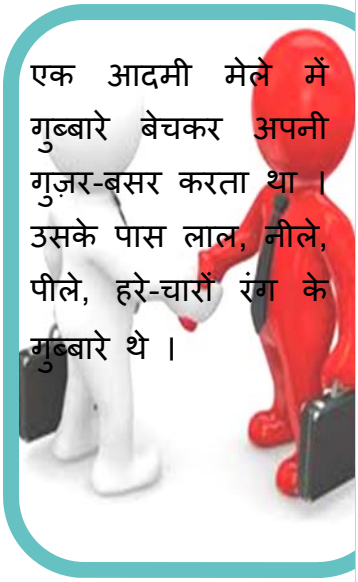

एक आदमी मेले में गुब्बारे बेचकर अपनी गुज़र-बसर करता था । उसके पास लाल, नीले, पीले, हरे-चारों रंग के गुब्बारे थे ।

एक आदमी मेले में गुब्बारे बेचकर अपनी गुज़र-बसर करता था । उसके पास लाल, नीले, पीले, हरे-चारों रंग के गुब्बारे थे । जब कभी उसकी बिक्री कम होने लगती, तब वह हीलियम गैस से भरा एक गुब्बारा हवा में छोड़ देता । बच्चे उसे उड़ता देखकर, वैसा ही उड़ने वाला गुब्बारा पाने के लिए मचल उठते । बच्चे उससे गुब्बारा ख़रीदते और इस तरह उसकी बिक्री फिर से बढ़ जाती । दिन-भर यही सिलसिला चलता रहता । एक दिन वह आदमी बाज़ार में खड़ा गुब्बारे बेच रहा था । अचानक उसे महसूस हुआ कि पीछे से कोई उसका कुरता पकड़कर खींच रहा है । उसने पीछे मुड़कर देखा तो एक छोटे से बच्चे को खड़ा पाया । उस बच्चे ने गुब्बारे वाले से पूछा, “अगर आप काला गुब्बारा छोड़ेंगे तो क्या वह भी उड़ेगा?” बच्चे की बात उसके दिल में लगी और उसने प्यार से जवाब दिया, “बेटे, गुब्बारा अपने रंग की वजह से नहीं उड़ता, बल्कि उसके अंदर क्या है, इस वजह से ही वह ऊपर जाता है ।” ठीक यही बात हमारी ज़िंदगी में भी लागू होती है। अगर लोगों का नजरिया बेहतर हो, उनमें अंदर से काम करने की इच्छा भरी हो तो वे खुलकर आपस में मिलकर काम करेंगे । इससे नुकसान तो कम होगा ही संस्थान के प्रति निष्ठा बढ़ेगी और लगन से काम करने का वातावरण तैयार होगा ।

<u>विश्वास हासिल करना आवश्यक</u>

कर्मचारियों से बेहतरीन काम लेने के लिए शानदार टीम लीडर होना जरूरी है । मुट्ठीभर लोगों का कोई समूह किला तभी फतह कर सकता है जब

जब उनका सेनापति उनमें वह जोश भर सके कि उन्हें कोई भी ऊंचाई ज्यादा न लगे । अतः सबसे जरूरी है कि संस्थान में कर्मचारियों की क्षमताओं का पूरा फायदा लेने के लिए उनका विश्वास जीता जाए । इसके लिए उनके साथ पूरी इज्जत से पेश आना जरूरी है । उनकी छोटी-बड़ी खुशी को बांटना और उनकी राय को पूरा सम्मान देना भी उतना ही जरूरी है । कई बार प्रबंधन के उच्चाधिकारी या लीडर अपनी टीम के सदस्यों से सिर्फ इसलिए राय नहीं लेते क्योंकि उन्हें लगता है कि एक बार राय लेने पर अगर उनकी बात नहीं मानी गयी तो उन्हें बुरा लगेगा । लेकिन सबसे जरूरी है कि टीम में सभी सदस्यों को विश्वास में लेकर काम किया जाए । यहां टीम लीडर की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वह खुद वक्त का पाबंद होगा तो उसके मातहत कर्मचारियों में स्वयंमेव यह गुण आदत का रूप ले लेगी । टीम लीडर का काम अपनी टीम का उत्साह बढ़ाते हुए दी गयी जिम्मेदारियों को समय से पूरा करना है मगर उसमें नयी चीज़ों को सीखने की ललक होनी चाहिए । ऐसी ललक जब संस्थान के कर्मचारियों में आदत का रूप लेने लगती है तो वह संस्थान जाहिर है नए प्रतिमान स्थापित करने लगता है ।

ऐसी ललक जब संस्थान के कर्मचारियों में आदत का रूप लेने लगती है तो वह संस्थान जाहिर है नए प्रतिमान स्थापित करने लगता है !जापानी कंपनियां हर बात में कर्मचारियों के हितों का ध्यान रखती हैं ।

जापानी कंपनियां हर बात में कर्मचारियों के हितों का ध्यान रखती हैं । जिससे वे स्वयं ही उत्पादकता के प्रति सचेत हो जाते हैं । जानी-मानी टोयोटा कंपनी के कर्मचारियों में तो काम की ऐसी आदत सी या ललक होती है कि वे तब तक काम करते हैं जब तक खुद थक कर चूर नहीं हो जाते । यह उनकी आदत ही बन चुकी है कि यदि वे किसी बात पर नाराज होते हैं तब भी कंपनी या अपने भाग्य को भले ही कोस लें पर अपने काम पर असर नहीं पड़ने देते । इसका कारण यह है कि जापानी कंपनियां काम का एक अच्छा वातावरण बनाने और लोगों में काम के प्रति सच्ची लगन को बढ़ावा देने के लिए कड़ा प्रयास करती हैं । वहां लोगों को लगातार प्रशिक्षण मिलता रहता है जो केवल तकनीक और मैनेजमेंट ही नहीं; कार्य से जुड़ी नैतिकता और अच्छी आदतों के विकास पर केंद्रित होता है । चरित्र का निर्माण उनकी एक आदत सी बन जाती है । अगर हमें भी एक अच्छी शख्सियत बनना है तो हमें अपनी आदतों को गहराई से जांचना होगा ।

चेतन और अवचेतन मन

हमारे चेतन मन के पास सोचने की शक्ति होती है । यह किसी बात को मान सकता है और नहीं भी मान सकता । मगर अवचेतन मन सिर्फ स्वीकार करता है । यह इनपुट (input) को लेकर कोई भेदभाव नहीं करता । अगर हम अपने मन में डर शंका, नफरत के भाव भरे तो यह आत्म सुझाव इन सभी भावों को सक्रिय बनाकर हकीकत में बदल देगा । हमारा अवचेतन मन एक डाटा बैंक की तरह है । अवचेतन मन एक गाड़ी की तरह है और चेतन मन एक ड्राइवर की तरह । शक्ति तो गाड़ी में होती है, मगर उसका कंट्रोल ड्राइवर के पास होता है ।

हमें अवचेतन मन को इस तरह ढालने की जरूरत है कि वह हमें सही और ठीक रास्ते पर ले जा सके । अवचेतन मन एक बगीचे की तरह होता है, जिसे कोई परवाह नहीं होती कि आप कैसे पौधे लगाते हैं । यह निरपेक्ष (neutral) होता है । इसमें अच्छा बोने पर अच्छा मिलता है । अन्यथा जंगली पौधे उग जायेंगे ।

हमें अवचेतन मन को इस तरह ढालने की जरूरत है कि वह हमें सही और ठीक रास्ते पर ले जा सके । अवचेतन मन एक बगीचे की तरह होता है, जिसे कोई परवाह नहीं होती कि आप कैसे पौधे लगाते हैं ।

बल्कि अच्छे बीज बोने के बावजूद जंगली पौधे उगने बंद नहीं होते । आवश्यकता होती है उन्हें उखाड़ फेंकने का सिलसिला जारी रखने की । इसी सिद्धांत को कर्मचारियों के मामले में समझने की जरूरत है। हमें याद रखना है कि सही और गलत विचार मन में एक साथ नहीं रह सकते । आवश्यकता उनके अवचेतन मन को इस तरह ढालने की है कि उनमें अच्छी आदतों का विकास हो । दरअसल अवचेतन योग्यता वह होती है जब हमें ध्यान देने और सोचने की ज्यादा जरूरत नहीं होती, क्योंकि यह हमारे व्यवहार में खुद ब खुद उतरने लगा है। जिस संस्थान के कर्मचारी इस स्तर पर पहुंच जाते हैं उनमें अच्छी आदतें स्वयंमेव घर करने लगती हैं । जब बुरी आदतें हमारे अवचेतन योग्यता के स्तर तक पहुंच जाती है तो वह रूकावट उत्पन्न करती है ।

परिवर्तन का विरोध

बुरी आदतों को पहचान लेने के बाद भी अक्सर देखा गया है कि लोग उन्हें बदलते नहीं हैं ऐसा आखिर क्यों होता है ? उनके न बदलने का कारण है कि वे जिम्मेदारी को स्वीकार करने से इनकार करते है ।

अपनी उन आदतों को बनाये रखने में उन्हें जो आनंद मिलता है वह परिवर्तन के दर्द से ज्यादा होता है । इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं --

1. परिवर्तन की इच्छाशक्ति का अभाव
2. परिवर्तन के लिए आवश्यक अनुशासन की कमी
3. विश्वास की कमी
4. आवश्यक जानकारी की कमी ।

प्रबंधन द्वारा इन बिंदुओं पर विचार कर अपने कर्मियों में आशातीत परिवर्तन लाया जा सकता है । सामान्यतः खराब आदत को न बदलने के बहाने दिये जाते हैं और कहा जाता है -- हम लोग इसी तरह करते हैं या कि मैं नहीं समझता इससे कोई फर्क पड़ेगा और कुछ न मिला तो कह दिया जाता है, मैं बहुत व्यस्त हूं ।

<u>अच्छी आदतों का निरूपण</u>

आदतों में परिवर्तन लाया जा सकता है । आवश्यकता है इसके लिए सही परिवेश का निर्माण करने की, कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने की, प्रेरित करने की और ऐसी स्थितियां उत्पन्न करने की जिससे कर्मचारियों में अच्छी आदतों का निरूपण हो सके । दरअसल सफल लोगों का राज यह है कि वे काम करने की उन आदतों को डाल लेते हैं जो असफल लोग करना नहीं चाहते । ये वही काम हैं जिन्हें सफल लोग भी करना नहीं चाहते, लेकिन वे फिर भी करते हैं । उदाहरण के लिए असफल लोग अनुशासन और मेहनत करना पसंद नहीं करते । सफल लोग भी अनुशासन और कड़ी मेहनत नापसंद करते हैं लेकिन वे फिर भी ऐसा करते हैं क्योंकि ये लोग उन कामों को करने की आदत डाल लेते हैं जिन्हें असफल लोग नहीं कर पाते । नजरिये और सोच का तरीका एक आदत है और इसे बदला जा सकता है।

<u>सही दृष्टि और संतुलन</u>

कर्मचारियों में काम के संबंध में सही दृष्टि बनाये रखने की प्रवृत्ति विकसित करना जरूरी है। जब कुछ गलत हो रहा होता है तो उसे ठीक करना प्रबंधन का ही काम होता है । समझा यह जाता है कि प्रायः हम गलत हो रहे कामों को लेकर इतने चिंतित हो जाते हैं कि जो सही हो रहा है, उसे भी अनदेखा करने की हममे आदत होती है ।

उदाहरण के लिए अगर किसी से कोई गलती हो जाती है तो हम एकदम उस पर चिल्ला पड़ते हैं या उसके विरुद्ध कार्रवाई कर बैठतेहैं।अच्छा यह रहेगा कि आप उसे अलग ले जाकर अकेले में बात करें । अगर प्रशंसा करनी हो तो सबके सामने करें ।

अगर किसी से सहमति न बने तो उस पर क्रोध करना जरूरी नहीं है । अगर अपने क्रोध पर काबू रखेंगे तो लोग अपनी असहमति को अन्यथा नहीं लेंगे । अगर आप अपने विचारों को खुला रखेंगे तो दूसरी ओर से भी आप ऐसे ही व्यवहार की अपेक्षा कर सकते हैं । प्रायः लोग अपनी सहमति कुछ इस तरह जताते हैं कि सामने वाला भी अपनी बात पर अड़ जाता है । समझने की बात यह है कि सभी स्थितियों में केवल तर्क ही काफी नहीं होगा । किसी से असहमत होने में भी व्यवहार कुशल होना जरूरी है । सबसे पहले तो दूसरे को अपना पक्ष रखने का मौका दें । उसकी बात सुने और जहां तक हो सके उससे अपनी सहमति भी प्रकट करें और जिन बातों पर सहमति न बना सकें, उसे समझाएं ।

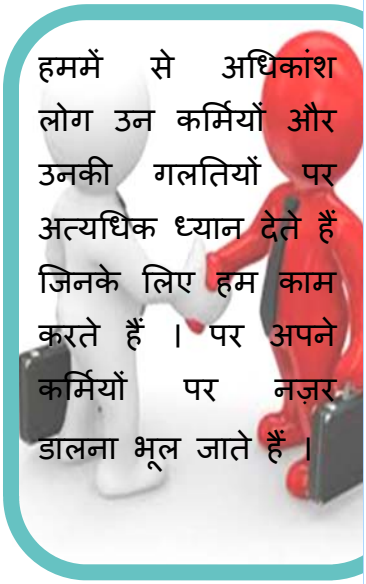

हममें से अधिकांश लोग उन कर्मियों और उनकी गलतियों पर अत्यधिक ध्यान देते हैं जिनके लिए हम काम करते हैं । पर अपने कर्मियों पर नज़र डालना भूल जाते हैं । अगर स्वयं को उन लोगों की नजर से देखा जाए तो आशातीत परिणाम देखने को मिलते हैं ।

<u>आत्म मंथन:</u>

आप क्या करना चाहते हैं, कैसा करना चाहते हैं - इस सोच को वर्तमान में अपने अंदर मंथन करने को आत्म-सुझाव कहते हैं । एक बार सब में जब इसकी परिपाटी शुरू हो जाती है तो यह हमारे अंदर विज्ञापन की तरह काम करता है । अपने बारे में, अपने लिए अंदर ही प्रचारित करता है । इसका हमारे चेतन और अवचेतन (Sub-concious) मन दोनों पर प्रभाव पड़ता है । अंततः यह हमारे नजरिए और व्यवहार को प्रभावित करता है और धीरे-धीरे आदत का रूप लेता है । यह दरअसल अपने अवचेतन मन को ढ़ालने या प्रोग्राम करने की विधि है ।

आत्म-सुझाव अच्छे या बुरे हो सकते हैं। जब हम बुरे आत्म-सुझावों को बार-बार दोहराते हैं तब हमारा अवचेतन मन उन पर विश्वास करने लगता है और हम उसी को वास्तव में व्यवहार करने लगते हैं। सकारात्मक आत्म-सुझाव को बार-बार मंथन करने से उसकी हमारे दिलोदिमाग में तस्वीर बन जाती है और वही असलियत का रूप लेने लगता है । एक उदाहरण के लिए जब कभी हमें सुबह 06.00 बजे ट्रेन पकड़नी हो और हमारे पास अलार्म घड़ी न हो तो हम मन में कहकर उठते हैं कि 04.00 बजे उठना है तो क्या हम नहीं उठते ? अगर उठते हैं तो इसके पीछे आत्म-सुझाव ही काम करता है । आत्म-सुझाव एक रास्ता है जिससे हम अपने दिमाग को प्रोग्राम करके ढ़ालते हैं । सकारात्मक आदतों को विकसित करने में आत्म-सुझाव की प्रवृत्ति महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है ।

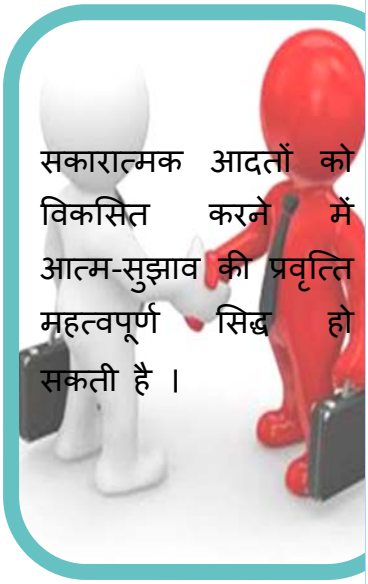

<u>हमारे नजरिए और आदत को तय करने वाले कारक</u>

हमारे नज़रिए को मुख्यतः तीन कारक प्रभावित करते हैं :-

वातावरणः घर, स्कूल, आफिस, मीडिया, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, धार्मिक पृष्ठभूमि, परंपराएं और भाषाएं, सामाजिक-राजनैतिक माहौल - ये सब मिलकर एक तहजीब बनाते हैं । चाहे घर हो या आफिस या अन्यत्र - हर जगह हर किसी की अपनी तहजीब होती है । उदाहरण के लिए हम एक दुकान में जाते हैं तो वहाँ का सेल्समैन बड़े अदब वाला होता है । लेकिन वहीं जब दूसरी दुकान पर जाते हैं तो वहाँ का सेल्समैन कभी-कभी बड़ा रूखा और बदतमीज मिल जाता है । उसी तरह किसी के घर में प्यार भरा माहौल मिलता है तो किसी के घर में हमेशा लड़ाई-झगड़े का । इसी तरह जब सरकार और राजनीतिक माहौल ईमानदारी का होता है तो लोग भी ईमानदार, मददगार और कानून का पालन करने वाले होते हैं । बेईमान और भ्रष्ट माहौल में जिस तरह एक ईमानदार का जीना मुश्किल होता है उसी तरह ईमानदारी भरे माहौल में बेईमान व्यक्ति को मुश्किलें होती हैं । निस्संदेह अच्छे वातावरण में मामूली कर्मचारी में स्वमेव अच्छी आदतें विकसित होती हैं और उसकी कार्य करने की शक्ति बढ़ जाती है, जबकि खराब माहौल में अच्छा काम करने वालों की भी क्षमता गिर जाती है ।

कार्य-संस्कृति का बहाव ऊपर से नीचे की ओर होता है, नीचे से ऊपर की ओर कभी नहीं । यह देखना बहुत जरूरी है कि हमने अपने लिए और आस-पास के लोगों के लिए कैसा वातावरण तैयार किया है । खराब वातावरण में अच्छे की उम्मीद करना बेमानी है ।

अनुभवः हम अपने जीवन में अपने काम-काज में हालातों से जैसा अनुभव पाते हैं वह हमारी आदतों का हिस्सा बन जाते हैं और उसी के अनुसार हमारा व्यवहार होता है । अगर किसी के प्रति हमारा अनुभव अच्छा होता है तो हमारा नज़रिया भी अच्छा होता है । जरूरी है कि कर्मचारियों को ऐसा कार्य-परिवेश मिले जिससे उनके अवचेतन में अच्छे अनुभव की छाप अंकित हो ।

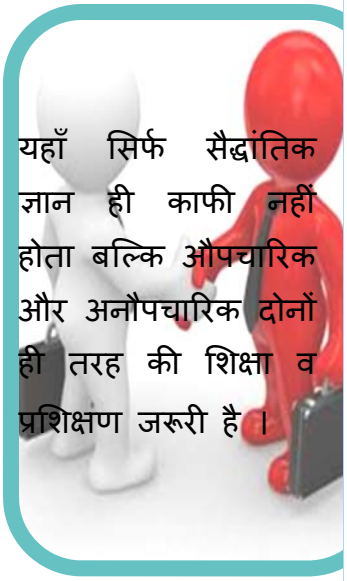

प्रशिक्षण भी ज़रूरी; यहाँ सिर्फ सैद्धांतिक ज्ञान ही काफी नहीं होता बल्कि औपचारिक और अनौपचारिक दोनों ही तरह की शिक्षा व प्रशिक्षण जरूरी है । ज्ञान और जानकारी को यदि योजनाबद्ध तरीके से प्रयोग किया जाए तो उससे बौद्धिक स्तर को बढ़ाने में आशातीत सफलता मिलती है । काम करने की कला अच्छी शिक्षा से ही आती है । जरूरी है कि प्रशिक्षण में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक व अन्य पहलू को समझने की आदत विकसित की जाए । अवचेतन में यह बिठाना बहुत जरूरी है कि जीवन की भव्यता काम के द्वारा ही संभव है । संस्थान में सभी को लगना चाहिए कि उनका काम महत्वपूर्ण है । यही प्रबंधन कला का सार है। जब कर्मचारियों को ऐसा एहसास होने लगता है तो उनके नज़रिए में बदलाव आने लगता है ।

उपसंहारः

काम के प्रति लोगों में अच्छी आदतें निरूपित करने और उनमें उत्साह जगाने से कार्य-निष्पादन में निरंतर निखार आता है । दरअसल हर व्यक्ति में मानसिक और शारीरिक ऊर्जा उत्पन्न होती है जिसके लिए काम ही सबसे अच्छा निकास है । एक विचारक के अनुसार 'आप पूछते हैं मैं लगातार काम क्यों करता हूं ।

इसका वही कारण है जिस कारण से मुर्गी अण्डे देती जाती है ।' काम के बिना इंसान घुट सा जाता है । उसे काम की उतनी ही जरूरत होती है जितनी हवा की। आवश्यकता है कि उसे सही वातावरण उपलब्ध कराने और सही दिशा में अभिप्रेरित करने की । वस्तुतः हर व्यक्ति अंदर से गरिमा और आत्मसम्मान की चाह रखता है । आवश्यकता है उसे अंतःप्रेरित करने की । लोगों को खुद से प्रेरित करने के लिए हमें उनकी जरूरतों और इच्छाओं को समझना होगा । प्रेरणा, कार्यक्षमता और आदत के बीच सीधा संबंध है । जो लोग उतना ही काम करते हैं कि उनकी नौकरी बची रहे तो ऐसे लोग किसी भी संस्थान के लिए महत्वपूर्ण नहीं हो सकते । अंतप्रेरणा से सोच में बदलाव लाया जा सकता है । प्रेरणा आग के समान होती है ।

कर्मचारियों को जितना प्रेरित किया जाएगा उनमें उतनी ही सकारात्मक आदतों का विकास होगा । कर्मचारियों को उचित सम्मान देकर, उनके कार्य को अधिक मनोरंजक बनाकर, प्रबंधन द्वारा उनकी बातों को गौर से सुनकर, उनकी समस्याओं और सुझावों पर गौर करके, उन्हें स्वयं लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करके, विकास के नये अवसर उपलब्ध कराकर, आवश्यकतानुसार समय-समय पर समुचित प्रशिक्षण दिलाकर तथा नयी चुनौतियों से जूझने के लिए प्रोत्साहित करके निस्संदेह उनके आचार और व्यवहार को सकारात्मक दिशा में रूपायित किया जा सकता है ।

ई-पत्रिका में लेखों आदि में प्रकट विचार मूलतः लेखकों के हैं तथा यह आवश्यक नहीं है कि इरेडा भी इन विचारों से सहमत हो ।

बिटिया

सतीश कुमार कलावत, इरेडा

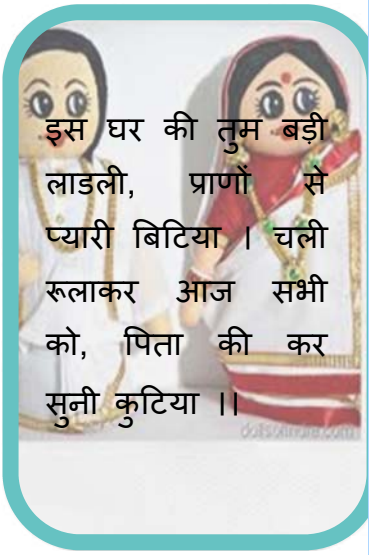

आंखों में मोती लेकर तुम, बिटिया जाती हो हाँ जाओ ।
शिक्षा का उपहार दे रहे, विदा समय यह लो, ले जाओ ।।
इन प्राणों में प्रीति तुम्हारी, ममता के धन सिंदूरी ।।
इन नयनों की बूँद स्पैली, प्रकट करती है मजबूरी ।।
लाचारी है फिर प्राणों में, क्यों है इतनी आकुलता ।
जब इस रीति परम्पराओं में वश न किसी का है चलता ।।
पितुकुल को तजकर अब बिटिया, पति-कुल में जाना होगा ।
नटखटपन को छोड़, धर्म का ही जिसमें बाना होगा ।।
इस घर की तुम बड़ी लाडली, प्राणों से प्यारी बिटिया ।
चली रूलाकर आज सभी को, पिता की कर सुनी कुटिया ।।
जिन हाथों ने लाड़ चाव से, अब तक था जिसको पाला ।
उन हाथों ने ही बिटिया को, दुलहे राजा जी को दे डाला ।।
जिसका देख जरा मन मैला, हो जाती थी हैरानी ।
कन्यादान उसी का कर के, हृदय बनाया पाषाणी ।।
किया न जाता था पल भर को, इन आंखों से दूर जिसे ।
मोती झरते विदा दे रहा, आज सकल परिवार उसे ।।
अपनी माँ के जीवन की तुम, प्रति-पल हो आधार रहो ।
विजयता पिता के हृदय मंदिर की, बिटिया तुम साकार रही ।।
आज जीवन के सुख-दुख सारे, वहीं बिताने तुम लो जान ।
आओगी जब कभी यहां तुम, होगी मेहमान समान ।।

ससुराल की कभी बुराई, कहीं न मुँह पर आ जावे ।
धर्म कर्म कर्त्तव्य पंथ में, पाँव नहीं डिगने पावे ।।
सात प्रतिज्ञायें जो तुमने, अग्निदेव सम्मुख की धारण ।
दम्पत्ति जीवन का महत्व हैं, करना सच्चे मन से पालन ।।
बेटी इन सात बचनों का, ध्यान हृदय में रहे सदा ।
दोनों कुल की लाज इसी में, भुला न देना इसे कदा ।।
पति ही हैं सर्वस्त्र तुम्हारे, पति ही को जीवन समझो ।
जो कुछ कहें उसी को मानों, उनको बिटिया तुम धन समझो ।।
शीलवती तुम बने बिटिया, पति-भक्त मैना सुंदर ।
नि:सन्देह स्वयं उपजेंगे, कल्प-वृक्ष घर के अन्दर ।।
पहन सुशिक्षा की साड़ी को, शुभ गुण भूषण अपनाओं ।
दस लक्षण शुभ लक्षण धारों, नित्य नये मंगल गाओं ।।
यह शिक्षा उपहार हृदय का, तुम को राह दिखायेगा ।
भूल भटक कर भी अंधियारा, पास न आने पायेगा ।।
हम सब की आंखों से मोती, उर से निकल रही आशीष ।
सभी सुखों से पूर्ण प्रफुल्लित, करें तुम्हें दुलहे राजा की ईश।।

जिन हाथों ने लाड़ चाव से, अब तक था जिसको पाला । उन हाथों ने ही बिटिया को, दुलहे राजा जी को दे डाला ।।

वर्तमान पर्यावरण -21वीं सदी की चुनौती

लेख सरीन, सेल

"पर्यावरण" शब्द परि+आवरण से बना है अर्थात् बाह्य आवरण को ही पर्यावरण कहते हैं । इस बाह्य आवरण का तात्पर्य हमारे चारों ओर के वातावरण और परिवेश से है, जिसे हम दूसरे शब्दों में प्रकृति भी कह सकते हैं। पृथ्वी पर विद्यमान संपूर्ण जीव-जगत के अस्तित्व, जीवन-यापन एवं चहुंमुखी विकास में प्रकृति की महत्वपूर्ण भूमिका है । मानव बुद्धिजीवी प्राणी है और प्रकृति के महत्व से भली-भांति परिचित होने के कारण ही सदियों से प्रकृति की पूजा करता रहा है ।

वैदिक काल से ही प्रकृति तथा मानव के बीच जीवन तंत्र का अटूट संबंध रहा है । हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने पृथ्वी में हवा, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं और मानव के सक्रिय सहयोगात्मक संतुलन को ध्यान में रखकर ही प्रकृति को पूज्य माना । धर्म के साथ प्रकृति को जोड़कर उन्होंने प्रकृति को पर्याप्त महत्व दिया । वे जानते थे कि जिस प्रकार जीवन के लिए भूमि की आवश्यकता होती है उसी प्रकार वनस्पतियां व अन्य प्राणी भी आवश्यक हैं । ये सभी प्रकृति के अभिन्न अंग हैं, इनमें से एक के भी नष्ट होने का प्रभाव दूसरे पर पड़ता है और परिणामस्वरूप प्राकृतिक असंतुलन पैदा हो जाता है । वस्तुत: पृथ्वी में हवा, पानी, मिट्टी, पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं और मानव का सक्रिय सहयोगात्मक संतुलन रहता है । पेड़-पौधे भूमि को उपजाऊ बनाते हैं, मिट्टी को बांधकर रखते हैं, बरसात करवाने तथा जल एवं वायु को स्वच्छ रखने में सहायक होते हैं । परंतु आज के बढ़ते औद्योगिकीकरण और शहरीकरण ने प्रकृति और मानव के बीच असंतुलन उत्पन्न कर दिया है । यह असंतुलन अशिक्षण, बढ़ती जनसंख्या, शहरों की ओर पलायन, वृक्षों की कटाई, गगनचुंबी इमारतें, बड़े-बड़ें उद्योगों की स्थापना आदि के कारण है और यही पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारण हैं । मेट्रोपोलिटन एवं बड़े शहरों में अनेक कार्बनिक और अकार्बनिक गैसे जैसे - कार्बन-मोनोऑक्साइड, अमोनिया आदि प्रदूषण के मुख्य स्रोत हैं ।

मनुष्य ने अपनी भैतिक सुख-सुविधाओं की आपूर्ति के लिए प्रकृति से खिलवाड़ किया है । वर्तमान मशीनी युग में मनुष्य द्वारा प्रकृति के अत्यधिक दोहन एवं नित नए कारखानों की स्थापना से पर्यावरण संकट उत्पन्न हुआ है । मानव ने प्रकृति के साथ जो अन्यायपूर्ण व्यवहार किया है उसी के फलस्वरूप प्रकृति का विरोधी रवैया हुआ है, जिसे भविष्य में सह पाना मुश्किल होगा ।

अशिक्षा के कारण देश की तेजी से बढ़ती आबादी के आवास की मूलभूत आवश्यकता को पूरा करने के लिए वृक्षों की कटाई करके ऊंची-ऊंची इमारतें बनाई जा रही हैं । वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से भूमि की ऊर्वरा शक्ति का तो ह्रास हो ही रहा है साथ ही प्रदूषण जैसी विकराल समस्या भी जन्म ले रही है ।

प्रदूषण पर्यावरण के ह्रास का प्रमुख कारण है । विकासशील देश नित नए उद्योगों की स्थापना करके बेराजगारी की समस्या को तो दूर कर रहे हैं किंतु इससे जल, वायु, ध्वनि तथा विभिन्न प्रकार के प्रदूषण बढ़ रहे हैं । कल -कारखानों और मोटरों से निकलने वाले धुएं से वायु प्रदुषण हो रहा है । जल, थल व नभ के मार्ग पर शक्ति चालित वाहन ध्वनि प्रदूषण का मुख्य स्रोत हैं । शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण शुद्ध पेयजल की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है । कारखानों से निकलने वाले कूड़े-कचरे के नदियों में मिलने से जल प्रदूषण हो रहा है, रासायनिक खाद और कीटनाशी दवाओं से मृदा प्रदूषण का खतरा बन गया है ।

इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि शहरीकरण, औद्योगिकीकरण एवं प्रदूषण जैसी समस्याओं ने पर्यावरण को बुरी तरह प्रभावित किया है । आज संपूर्ण विश्व पर्यावरण को लेकर चिंतित है । इस भयावह स्थिति से बचने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना आज की अनिवार्य आवश्यकता है ।

इस दिशा में सर्वप्रथम निरक्षरता को समाप्त किया जाना चाहिए । साक्षर भारत की परिकल्पना में जनसंख्या वृद्धि दर स्वयं नियंत्रित हो जाएगी । केरल राज्य इसका प्रमाण है । जहां साक्षरता के साथ-साथ जनसंख्या नियंत्रण भी है ।

इसके बाद बात आती है प्रदूषण निवारण की । आज विश्व भर के वैज्ञानिक और पर्यावरणविद इस दिशा में कार्यरत हैं । सर्वप्रथम वनों के काटने पर प्रतिबंध लगाया गया है और वन संपना के विस्तार हेतु वृक्ष लगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया । इसके लिए सरकार की ओर से वृक्ष आदि नि:शुल्क उपलब्ध कराए जाते हैं । "पर्यावरण प्रदूषण संस्था" और स्वच्छ वायु अधिनियम जैसे विधिक उपायों से वायु प्रदूषण पर रोक लगाने का प्रयास किया जा रहा है । जहरीले, धुआं उगलने वाले कारखानों तथा वाहनों पर भारी आर्थिक दंड का प्रावधान है । विभिन्न संचार माध्यमों–दूरदर्शन, समाचार-पत्र तथा आकाशवाणी के माध्यम से जनता को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के प्रयास किए जा रहे हैं । नदियों में खुलने वाले प्रदूषण स्रोतों को बंद करने की योजनाएं चलाई जा रही हैं । पालिथीन के प्रयोग को बंद करने के लिए चलाया जा रहा है अभियान भी प्रशंसनीय है ।

आज का पर्यावरण रावण का रूप लेकर संसार के समक्ष एक भयंकर खतरे के रूप में प्रकट हो गया है । इस खतरे से संपूर्ण भूमंडल का अस्तित्व नष्ट हो जाए इससे पहले हमें पर्यावरण की सुरक्षा करने का संकल्प लेना होगा ।

यात्रा संस्मरण-कोलकाता-खुशियों/हर्ष का शहर(सिटी ऑफ जॉय)

सोनिया सहिज्वानी, पीईसी लिमिटेड

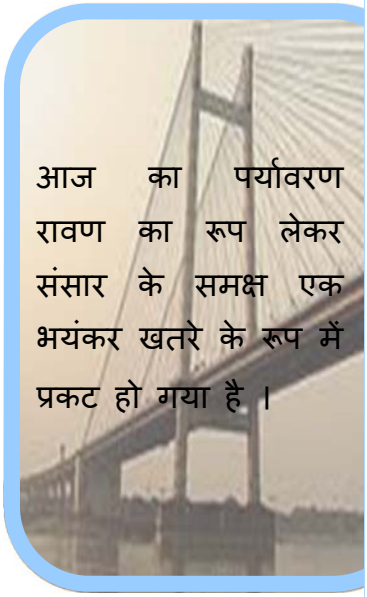

मैं पी ई सी लिमिटेड नामक कंपनी के विधि कक्ष में उप विधि प्रबंधक के पद पर कार्यरत हूँ। सन 2010 जून से इस कंपनी में मैंने प्रबंधन प्रशिक्षु के रूप में अपनी पहली नौकरी की शुरुआत की । पी ई सी लिमिटेड वाणिज्य मंत्रालय के अंतर्गत आने वाली आयात-निर्यात व्यापार से सम्बंधित कम्पनियों में से एक है। इस सन्दर्भ में जनवरी 2011 में विभिन्न विभागों के प्रबंधन प्रशिक्षुओं को ओरिएंटेशन हेतु कांडला, कोलकाता इत्यादि शहरों में भेजने का कार्यक्रम निश्चित किया गया। कोलकाता के पास हल्दिया पोर्ट होने के कारण कोलकाता शहर चुना गया जहाँ पी ई सी द्वारा आयात की गयी वस्तुएं पोर्ट गोदाम में रखी जाती हैं । साथ ही में कोलकाता पोर्ट, भिन्न गोदाम इत्यादि देखने की व्यवस्था की गयी एवं सूची में समावेश किया गया। यह सुनकर मेरी ख़ुशी का ठिकाना न रहा क्योंकि मैंने कोलकाता शहर के बारे में सुना बहुत था परन्तु कभी देखा न था । सिन्धी होने के पश्चात भी मुझे बंगाली रीति रिवाज़, मिठाइयाँ, यहाँ का पहनावा, अंग्रेजों के ज़माने की बनी संरचनाएं एवं भवनों इत्यादि में बहुत दिलचस्पी एवं रूचि थी। आखिरकार मुझे मौका मिला और जनवरी की कड़ाकेदार ठण्ड के बीच हम एक रविवार शाम कोलकाता राजधानी से अपनी मंजिल की और निकल पड़े । दिल्ली से कोलकाता के सफ़र के बीच हमारी गाड़ी इलाहाबाद, गया, बिहार, तथा धनबाद जैसे शहरों से होते हुए बंगाल की ओर पहुंची। हंसते-गाते, खेलते-खाते हुए हम अगली सुबह हावड़ा जंक्शन पहुँच गए। रेलगाड़ी से उतर कर स्टेशन से बाहर निकलते ही मुझे "सिटी ऑफ जॉय" के नाम से मशहूर कोलकाता की पहली झलक दिखाई दी। ऐसा लगा मानो मुझे भारत के दो पहलू एकसाथ जीते हुए नज़र आए। एक तरफ थे स्टेशन से बाहर एवं अन्दर जाते हुए सुन्दर कपड़ों, गहनों में लदे हुए कोलकाता के बंगाली निवासी। साथ में बड़ी-बड़ी गाड़ियों में घूमते कोलकाता के नौजवान । और ठीक दूसरी तरफ, मेरी नज़र पड़ी हुगली नदी पर बने प्रसिद्ध हावड़ा ब्रिज पर जिसे देख एक अलग ही दुनिया का एहसास हुआ ।

हावड़ा ब्रिज पर हर तरफ लोगों का जमावड़ा था। इतने लोग देख दिल्ली के चांदनी चौक की याद आ गयी । ऐसा लगा मानो मैं 50 साल पीछे किसी ब्लैक एवं वाईट दुनिया में कदम रख चुकी थी । ब्रिज के दोनों तरफ सामान बेचते हुए दुकानदार, खिलौने, मछली रखे हुए औरतें एवं छोटे-छोटे बच्चे, मुख्य शहर से हावड़ा जाने वाले आम आदमी, मजदूरों की तेज़ रफ़्तार, फैरी से रस्ता पार करने वाले व्यापारी, इन सब को देख लगा कोलकाता मे मुंबई जैसी भागम भाग भी थी । पिछले कुछ वर्षों में कोलकाता शहर ने खूब प्रगति की, श्री ज्योति बासु जी एवं ममता दीदी ने अपने पश्चिम बंगाल की बढ़ोत्तरी के लिए खूब निरंतर प्रयास किया। नतीजा मेरे समक्ष था। जैसे-जैसे मैं कोलकाता शहर के भीतर आने लगी, मुझे इस शहर के विकास की झलक दिखाई दी । एक तरफ थी ऊंची ईमारतें, सुंदर विशाल विद्यासागर सेतु पुल, बड़े-बड़े होटल, मॉल, कोलकाता उच्च न्यायालय, राईटर्स बिल्डिंग, मशहूर इडन गार्डन स्टेडियम, इत्यादि । तो दूसरी तरफ था विक्टोरिया मेमोरियल, अंग्रेजों की वास्तुकला के अनुसार दिखती लाल ईंटो की इमारतें, विक्टोरियल संरचनाएं, भवन, छोटी-छोटी पटरियों पर समान बेचते नया बाज़ार (New Market) के दुकानदार एवं विक्टोरिया मेमोरियल के बाहर चलते सैलानियों के लिए रथ वाले घोड़े । हमारा होटल जे.सी.बोस सड़क पर स्थित था एवं सुविधाओं से भरपूर था । परन्तु मैंने ये जाना कि असली कोलकाता का मज़ा गाड़ी में नहीं अथवा रिक्शा, ऑटो तथा सालों से चलती आ रही सड़क पर ट्राम में था ।

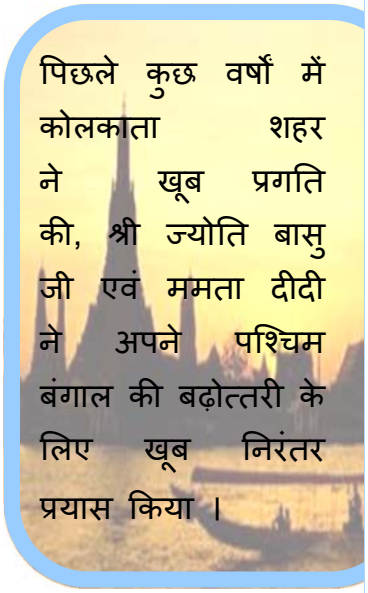

हर तरफ मुझे पीले रंग की टैक्सियां दिखाई दी । सब एक समान थी तथा मरसीडीज़ गाड़ी के बगल में चलती 1-2 रूपये में सफ़र की जाने वाली ट्राम भी साथ दिखाई दी। पूरी जिंदगी दिल्ली में व्यतीत करने के बाद हर नए शहर का रहन-सहन, बोल-चाल, रीति-रिवाज़ जानने की जागरूकता मुझमें हमेशा रही। पहले ही दिन से कोलकाता मुझे रास आया। जैसे कि कहते है: '***कोलकाता हमार खूब भाला लागली छे***'। कहने का तात्पर्य ये कि मुझे कोलकाता बहुत अच्छा लगा। पहले दिन कि शाम को हमने न्यू मार्किट में खरीददारी करने का मन बनाया। मैं हैरान थी कि वहाँ चीजें कितनी सस्ती मिल रही थी । दिल्ली के मुताबिक एक तिहाई दाम पर चूडियाँ, गहने, बैग, जूते, कुर्ते इत्यादि मिले ।

न्यू मार्किट दिल्ली के लाजपत एवं सरोजिनी नगर समान है । कम दाम मे अच्छा समान मिला । कोलकाता चमड़े के लिए भी मशहूर है एवं प्रसिद्ध "श्री लेदेर्स" दुकान भी इस बाज़ार मे स्थित है। यहाँ खरीदारी का हमने खूब लुत्फ़ उठाया ।

अगले दिन हम हल्दिया पोर्ट गए एवं अनेक जहाज़ देखे। 3-4 घंटे की दूरी पर स्थित यह पोर्ट अनेक एकड़ों में फैला हुआ था। पहली बार इतने बड़े जहाज़ को अंदर से देख खूब आनंद आया। तीसरे दिन हम काली बाड़ी मंदिर गए। बंगाली अत्यंत पाठ-पूजा वाले, दुर्गा मां के सच्चे उपासक है, यह सब जानते हैं। दुर्गा पूजा इनका लोकप्रिय उत्सव है तथा काली माँ एवं दुर्गा माँ की सच्चे मन से पूजा करते है। कोलकाता के निवासी भक्ति भावपूर्ण हैं, यह सुना था, अब खुद देख भी लिया। बंगाली रस्मों से पूजा करने का ये मौका अत्यंत आनंदमयी था ।

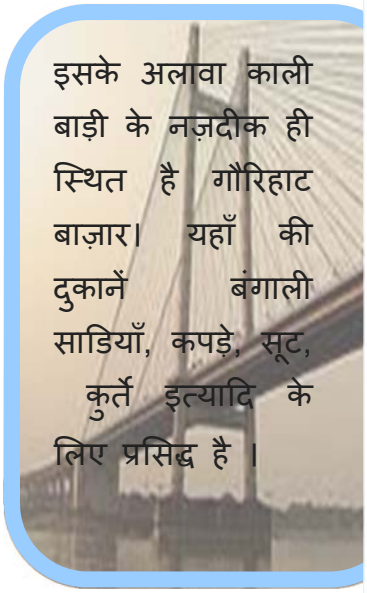

इसके अलावा काली बाड़ी के नज़दीक ही स्थित है गौरिहाट बाज़ार। यहाँ की दुकानें बंगाली साड़ियाँ, कपड़े, सूट, कुर्ते इत्यादि के लिए प्रसिद्ध है। आदि धक्तेशवर नामक मशहूर दुकान में जाकर मेरा भी मन किया कि मैं भी खरीददारी करूँ। मेरे साथियों ने बहुत साड़ियाँ खरीदी एवं दाम देखकर मैं दंग रह गई। सुंदर से सुंदर साड़ी मात्र 600/700 रूपये की थी। मैंने बंगाल की मशहूर लाल एवं सफेद प्रिंट की साड़ी भी खरीदी। कोलकाता में खरीददारी का अलग की मज़ा है। उसी दिन शाम हम साल्ट लेक सिटी मॉल गए। वह साल्ट लेक स्टेडियम के नज़दीक है । यहाँ दिखाई दिया कोलकाता का प्रगतिशील रूप। नौजवान फुटबाल की जर्सी पहने माल में घूम रहे थे। एक से एक मशहूर ब्रैंड वहां मौजूद थे। इसके अलावा कोलकाता के निवासी खूब मनोरंजन के शौक़ीन हैं। संगीत नाच गाना, इत्यादी में रूचि रखते हैं । कोलकाता में जगह-जगह संगीत, कला अकेडमी तथा पढ़ने (रीडिंग) के क्लब हैं । अंग्रेजों के शौक तथा रहन-सहन की झलक आज भी यहां दिखती है। यहाँ के नौजवान को खेल-कूद में भी खूब दिलचस्पी है। फुटबाल का तो जैसे यहाँ सबको जुनून है ।

भारत के प्रसिद्ध मोहन बगान फुटबाल क्लब' फुटबाल के वहाँ के नौजवान ही नहीं पूरा शहर ही दीवाना है । भारत-पाक मैच हो या आई पी एल, इडन गार्डन मैदान लोगों से खचा-खच भरा रहता है। अफ़सोस मैं वहां अंदर जा न सकी ।

मेरे सफर के आखरी दिन में मैंने कोलकाता के लोगों में एकता के नज़ारे देखे। विभिन्नता में भी एकता का उदाहरण देखा । चाहे कोई उत्सव हो या त्योहार या कोई राजनैतिक मुद्दा, जगह-जगह लोग एकत्र हो रैली या भाषण का हिस्सा बनते देखे। जिस दिन हम कोलकाता पहुँचे थे उसी दिन वहां शहर बंद था और मैने एक जुट होकर लोगों को अपनी बात कहते हुए देखा एवं सुना। यहां के लोग अपने शहर के विकास, बेहतरी के लिए जागरूक हैं। जिम्मेदारी लेते हैं तथा सरकार को अपनी बात भली-भाँति कहते हैं। लड़कियों औरतों की इज्ज़त करते हैं एवं यहाँ कि महिलाओं को मैंने निर्दलीय पाया । जहां एक ओर भारत की राजधानी होने के बावजूद दिल्ली वाले अपनी जिंदगी में मग्न रहते हैं, वही दूसरी और कोलकाता में अमीरी-गरीबी, भिन्न जातियों में भी एक जुटता है । कपड़ा एवं खाना आज भी यहां खूब सस्ता मिलता है परन्तु दूसरी तरफ सब जानते है कि बड़े-बड़े उद्योगपति, विद्वान, लेखक, खिलाड़ी, गायक, अभिनेता, निदेशक यहां से उभरे हैं। साहित्य हो या लेख, बॉलीवुड हो या क्रिकेट, बंगाल ने भारत को अनेकों नाम एवं गौरव दिए हैं । चाहे सौरव दादा हो या रविन्द्र नाथ टैगोर, ममता बनर्जी, रानी मुखर्जी हो या ज्योति बसु, भारत में इनकी भूमिका का वर्णन करने की जरूरत नहीं ।

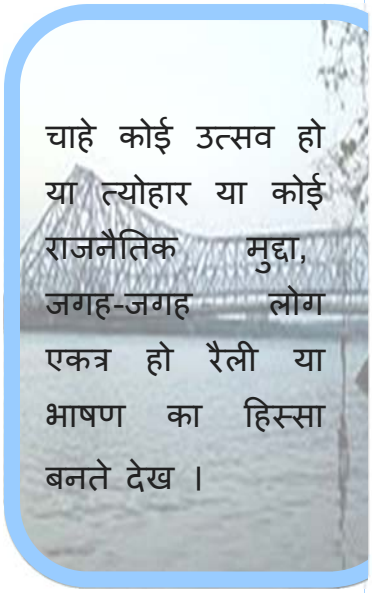

मैंने कुछ दिन के कोलकाता के सफर में इस शहर को जानने समझने का प्रयास किया, हूगली नदी के किनारे खड़े होकर समुद्र को देखा, **नदियों** को निहारा, विद्यासागर सेतु ब्रिज की सुंदरता, विशालता को सराहा । के सी दास की प्रसिद्ध मिठाई का लुत्फ उठाया। मैंने बहुत शहर घूमें परन्तु यह सफर मेरे लिए सबसे यादगार रहा । कोलकाता प्रगति के मार्ग पर निरंतर बढ़ रहा है परन्तु आज भी वह अपनी जड़, नैतिक मूल्यों को नहीं भूला है । एक आम आदमी आज भी ट्राम में या फैरी से सफर करता है, यहाँ के निवासी दो रूपये से लेकर 500 रू० का खाना खाते है। पुराना एवं नया कोलकाता एक साथ जीवित है। सिक्के के दो पहलू की तरह, कोलकाता के यह दो रूप को एक साथ रहते देख बहुत आनंद आया ।

प्रभावी जल प्रबंधन और देश का विकास

दीपक आहूजा, ओएनजीसी विदेश

जल प्रकृति का अनुपम उपहार है । मानव जाति अपने प्रादुर्भावकाल से ही इस उपहार का उपयोग अपने हित के लिए करती आई है । जल वह प्राकृतिक उपहार है जिसका कोई विकल्प नहीं है, इसलिए जल को अमृतया जीवन भी कहा गया है । जल के बिना जीवन की संभावना भी नहीं है। प्रत्यक्ष रूप से तो जल की मानवीय आवश्यकता सीमित है, परंतु परोक्ष आवश्यकताओं पर नजर डालें, तो दैनिक जीवन की आवश्यकताएं जैसे अन्न, फल, सब्जी, दूध से लेकर हमारे पहरावे, आवास तक सब जल से जुड़े हैं।जल का जरा भी संतुलन बिगड़ जाए, तो जीवन यापन कष्टप्रद होने में देर नहीं। प्रकृति का जो असंतुलन पिछले दो-तीन दशकों से देखा जा रहा है, इसके परिणामस्वरूप विश्व भर के वैज्ञानिक जल संसाधनों व जल संरक्षण की ओर जनमानस को सचेत व सजग कर रहे हैं।

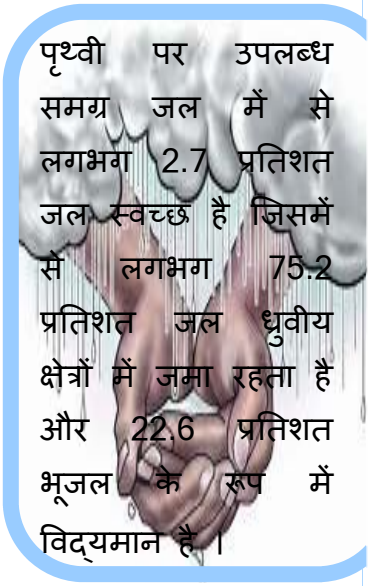

पृथ्वी पर उपलब्ध समग्र जल में से लगभग 2.7 प्रतिशत जल स्वच्छ है जिसमें से लगभग 75.2 प्रतिशत जल ध्रुवीय क्षेत्रों में जमा रहता है और 22.6 प्रतिशत भूजल के रूप में विद्यमान है ।

जल के सामान्य तथ्य

जल या पानी एक आम रासायनिक पदार्थ है जो जीवन के सभी ज्ञात रूपों के जीवित रहने के लिए जरूरी है । आमतौर पर जल अपनी द्रव अवस्था में उपयोग में लाया जाता है पर यह ठोस अवस्था, बर्फ और गैस अवस्था, जल वाष्प या भाप रूप में भी पाया जाता है। पृथ्वी के लगभग तीन चौथाई हिस्से पर विश्व के महासागरों का अधिकार है। अनुमानत: पृथ्वी पर जल की कुल मात्रा लगभग 1400 मिलियन घन किलोमीटर है जो कि पृथ्वी पर 3000 मीटर गहरी परत बिछा देने के लिए काफी है। तथापि जल की इस विशाल मात्रा में स्वच्छ जल का अनुपात बहुत कम है। पृथ्वी पर उपलब्ध समग्र जल में से लगभग 2.7 प्रतिशत जल स्वच्छ है जिसमें से लगभग 75.2 प्रतिशत जल ध्रुवीय क्षेत्रों में जमा रहता है और 22.6 प्रतिशत भूजल के रूप में विद्यमान है। शेष जल झीलों, नदियों, वायुमण्डल, नमी, मृदा और वनस्पति में मौजूद है। जल की जो मात्रा उपभोग और अन्य प्रयोगों के लिए वस्तुतः उपलब्ध है, वह नदियों, झीलों और भूजल में उपलब्ध मात्रा का छोटा-सा हिस्सा है। इसलिए जल संसाधन विकास और प्रबन्ध की बाबत संकट इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकि अधिकांश जल उपभोग के लिए उपलब्ध नहीं हो पाता

और दूसरे इसका विषमतापूर्ण स्थानिक वितरण इसकी एक अन्य विशिष्टता है। फलतः जल का महत्व स्वीकार किया गया है और इसके किफायती प्रयोग तथा प्रबन्ध पर अधिक बल दिया गया है।

पृथ्वी पर उपलब्ध जल जल-चक्र के माध्यम से चलायमान है। जल लगातार एक चक्र में घूमता रहता है जिसे जलचक्र कहते है, इसमें वाष्पीकरण, वर्षा और बह कर सागर मे पहुँचना शामिल है। हवा जल वाष्प को स्थल के ऊपर उसी दर से उड़ा ले जाती है जिस गति से यह बहकर सागर मे पहुँचाता है । जल चक्र का चित्र नीचे प्रस्तुत किया गया है:

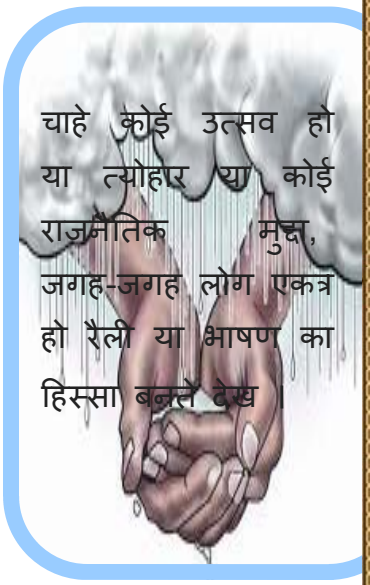

चाहे कोई उत्सव हो या त्योहार या कोई राजनैतिक मुद्दा, जगह-जगह लोग एकत्र हो रैली या भाषण का हिस्सा बनते देख ।

अधिकांश उपभोक्ताओं जैसे कि मनुष्यों, पशुओं अथवा पौधों के लिए जल के संचलन की जरूरत होती है । जल संसाधनों की गतिशील और नवीकरणीय प्रकृति और इसके प्रयोग की बारम्बार जरूरत को दृष्टिगत रखते हुए यह जरूरी है कि जल संसाधनों को उनकी प्रवाह दरों के अनुसार मापा जाए । इस प्रकार जल संसाधनों के दो पहलू हैं । अधिकांश विकासात्मक जरूरतों के लिए प्रवाह के रूप में मापित गतिशील संसाधन अधिक प्रासंगिक हैं । आरक्षित भण्डार की स्थिर अथवा नियत प्रकृति और साथ ही जल की मात्रा तथा जल निकायों के क्षेत्र की लम्बाई व मत्स्यपालन, नौ संचालन आदि जैसे कुछेक क्रियाकलापों के लिए भी प्रासंगिक है।

जल का व्यय/ अपव्यय

जल के बारे में एक नहीं, कई चौंकाने वाले तथ्य हैं। विश्व में और विशेष रुप से भारत में जल किस प्रकार नष्ट होता है इस विषय में जो तथ्य सामने आए हैं उस पर जागरूकता से ध्यान देकर जल के अपव्यय को रोका जा सकता हैं। अनेक तथ्य ऐसे हैं जो हमें आने वाले ख़तरे से तो सावधान करते ही हैं, दूसरों से प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और पानी के महत्व व इसके अनजाने स्रोतों की जानकारी भी देते हैं।

- पृथ्वी पर पैदा होने वाली सभी वनस्पतियाँ से भी हमें पानी मिलता है। आलू और अनानास में 80 प्रतिशत और टमाटर में 95 प्रतिशत पानी है।
- पीने के लिए मानव को प्रतिदिन 3 लीटर और पशुओं को 50 लीटर पानी चाहिए।
- भारत में 83 प्रतिशत पानी खेती और सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है।
- इज़राइल में औसतन मात्र 10 सेंटीमीटर वर्षा होती है, इस वर्षा से वह इतना अनाज पैदा कर लेता है कि वह उसका निर्यात कर सकता है। दूसरी ओर भारत में औसतन 50 सेंटीमीटर से भी अधिक वर्षा होने के बावजूद अनाज की कमी बनी रहती है।
- पिछले 50 वर्षों में जल के लिए 37 भीषण हत्याकांड हुए हैं।
- भारतीय नारी पीने के जल के लिए रोज ही औसतन चार मील पैदल चलती है।
- पानी जन्य रोगों से विश्व में हर वर्ष 22 लाख लोगों की मौत हो जाती है।
- यदि ब्रश करते समय नल खुला रह गया है, तो पाँच मिनट में करीब 25 से 30 लीटर पानी बरबाद होता है।
- बाथ टब में नहाते समय 300 से 500 लीटर पानी खर्च होता है, जबकि सामान्य रूप से नहाने में 100 से 150 लीटर पानी खर्च होता है।
- विश्व में प्रति 10 व्यक्तियों में से 2 व्यक्तियों को पीने का शुद्ध पानी नहीं मिल पाता है ।
- प्रति वर्ष 6 अरब लीटर बोतल पैक पानी मनुष्य द्वारा पीने के लिए प्रयुक्त किया जाता है ।
- मुंबई में रोज़ वाहन धोने में ही 50 लाख लीटर पानी खर्च हो जाता है।

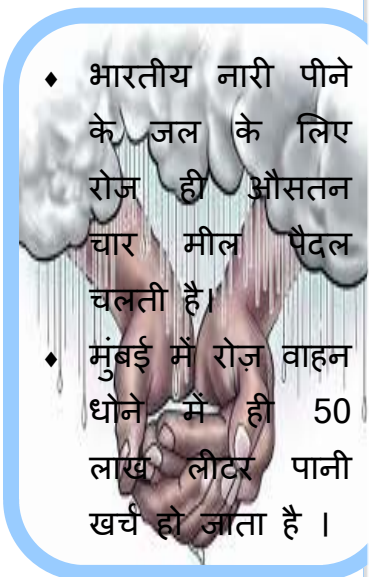

- भारतीय नारी पीने के जल के लिए रोज ही औसतन चार मील पैदल चलती है।
- मुंबई में रोज़ वाहन धोने में ही 50 लाख लीटर पानी खर्च हो जाता है ।

- दिल्ली, मुंबई और चेन्नई जैसे महानगरों में पाइप लाइनों के वॉल्व की खराबी के कारण रोज़ 14 से 44 प्रतिशत पानी बेकार बह जाता है।
- नदियाँ पानी का सबसे बड़ा स्रोत हैं। जहाँ एक ओर नदियों में बढ़ते प्रदूषण रोकने के लिए विशेषज्ञ उपाय खोज रहे हैं वहीं कल कारखानों से बहते हुए रसायन उन्हें भारी मात्रा में दूषित कर रहे हैं।

भारत में जल संकट

नासा की एक रिपोर्ट ने पानी को लेकर देश भर में बढ़ती जा रही लापरवाही के प्रति आंखें खोली है । इस रिपोर्ट में भारत में सूखे की स्थिति पैदा होने के लिए जिम्मेवार कारणों में से एक अहम कारण अंधाधुंध जल दोहन को बताया गया है। बताते चलें कि देश भर के 604 जिलों में से 161 सूखे की मार झेल रहे हैं। वैसे अब बताया जा रहा है कि सूखे की मार से बेहाल जिलों की संख्या बढ़कर 246 हो गई है। यानी कहा जाए तो आधा देश सूखे की चपेट में है।

- भारतीय नारी पीने के जल के लिए रोज ही औसतन चार मील पैदल चलती है।
- मुंबई में रोज़ वाहन धोने में ही 50 लाख लीटर पानी खर्च हो जाता है ।

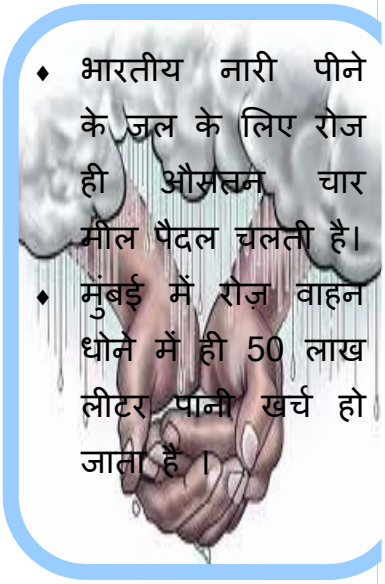

बहरहाल, नासा की इस रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत के कई राज्य क्षमता से ज्यादा जल दोहन कर रहे हैं। यहां क्षमता से तात्पर्य यह है कि उनसे जितने सलाना जल दोहन की उम्मीद केंद्र करती है, वे उससे कहीं ज्यादा जल दोहन कर रहे हैं। नासा ने यह अध्ययन 2002 से 2008 के बीच की स्थितियों के आधार पर किया है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि पंजाब, हरियाणा और राजस्थान हर साल औसतन 17.7 अरब क्यूबिक मीटर पानी जमीन के अंदर से निकाल रहे हैं । जबकि केंद्र की तरफ से लगाए गए अनुमान के मुताबिक इन्हें हर साल 13.2 अरब क्यूबिक मीटर पानी ही जमीन के अंदर से निकालना था। इस तरह से देखा जाए तो ये तीन राज्य मिलकर क्षमता से 30 फीसदी ज्यादा पानी का दोहन कर रहे हैं। जाहिर है कि बिना कुछ सोचे-विचारे जब इस पैमाने पर प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जाएगा तो प्रकृति भी बदला लेगी और वही हो रहा है। इस रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि भारत का महज 58 फीसदी भूजल ही हर साल रिचार्ज हो पाता है।

नासा की यह रिपोर्ट बताती है कि अंधाधुंध जल दोहन की वजह से पूरे उत्तर पश्चिम भारत के भूजल स्तर में हर साल 4 सेंटीमीटर यानी 1.6 इंच की कमी आ रही है। इस अध्ययन को अंजाम देने में नासा के जल विज्ञानी मेट रोडल ने अहम भूमिका निभाई है।

उनके हवाले से इस रिपोर्ट में बताया गया है कि देश के उत्तर पश्चिम क्षेत्र में 2002 से 2008 के दौरान तकरीबन 109 क्यूबिक किलोमीटर पानी की कमी हुई है। यह मात्रा कितनी अधिक है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यह अमेरिका के सबसे बड़े जलाशय लेक मीड की क्षमता से दुगने से भी कहीं ज्यादा है।

अंधाधुंध जल दोहन और इससे भूजल स्तर में आ रही गिरावट के बड़े भयानक परिणाम होंगे। यह बात भी नासा की रिपोर्ट ही कह रही है। इस रिपोर्ट के मुताबिक अगर अंधाधुंध जल दोहन इसी तरह से जारी रहा तो आने वाले समय में भारत को अनाज और पानी के संकट को झेलने के लिए अभी से तैयार हो जाना चाहिए। जाहिर है कि जब जल संकट बढ़ेगा तो खेती पर इसका गहरा प्रभाव पड़ेगा। अनाजों के उत्पादन में कमी आएगी। इस वजह से अनाज संकट पैदा होगा और भूख का एक नया चेहरा उभरकर सामने आएगा। एक बड़ा तबका जो आज भरपेट भोजन कर पाता है उसके लिए पेट भर खाना मिलना मुश्किल हो जाएगा। भुखमरी की जो समस्या पैदा होगी उससे फिर निपटना आसान नहीं होगा।

इसके अलावा पीने के पानी का टोटा तो होगा ही। अभी ही देश के कई हिस्से ऐसे हैं जहां के लोगों को पीने के लिए साफ पानी नहीं मिल पा रहा है। कई क्षेत्र ऐसे हैं जहां गर्मी के दिनों में हैंडपंप से पानी आना बंद हो जाता है। वहां के लोगों को हर साल बोरिंग को कुछ फुट बढ़वाना होता है। यह समस्या भूजल स्तर के गिरते जाने की वजह से ही पैदा हुई है। जब पीने के पानी का संकट पैदा होगा तो बोतलबंद पानी का कारोबार काफी तेजी से बढ़ेगा। कहने का मतलब यह कि जिसके पास पैसा होगा वह अपनी प्यास बुझा सकेगा और जिसके पास पैसा नहीं होगा उसे अपनी प्यास बुझाने के लिए भी संघर्ष करना पड़ेगा। स्थिति की भयावहता की कल्पना ही सिहरन पैदा करती है।

भारत में दुनिया का हर छठा आदमी रहता है। यानी कहा जाए तो दुनिया के कुल आबादी के तकरीबन सत्रह फीसदी लोग भारत में रहते हैं। जबकि दुनिया का महज साढ़े चार फीसदी पानी ही भारत में उपलब्ध है। ऐसे में जल समस्या से दो-चार होना कोई आनापेक्षित बात नहीं है। एक बात तो तय है कि प्राकृतिक संसाधनों में इजाफा तो नहीं किया जा सकता है लेकिन इसका संरक्षण अवश्य किया जा सकता है।

भारत में लोग किसी एक माध्यम से पेयजल प्राप्त करने पर निर्भर नहीं हैं। इस देश में 35.7 फीसदी लोग हैंडपंप से, 36.7 फीसदी लोग नल से, 18.2 फीसदी लोग तालाब, पोखर या झील से, 5.6 फीसदी कुओं से, 1.2 फीसदी लोग पारंपरिक साधनों से और 2.6 फीसदी लोग अन्य माध्यमों से पीने का पानी प्राप्त करते हैं। इस लिहाज से अगर देखा जाए तो जल संकट को दूर करने के लिए समग्र कार्ययोजना की जरूरत है।

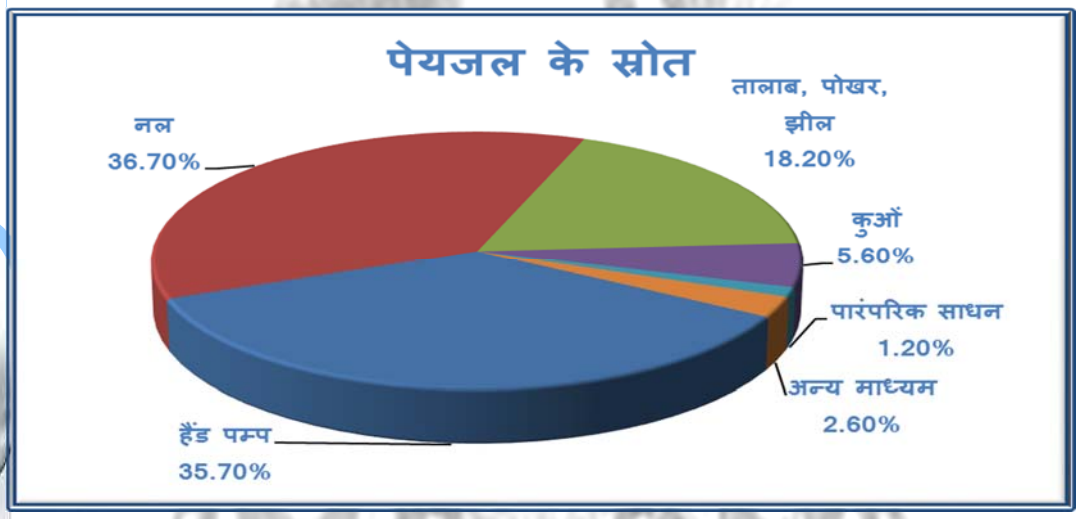

देश के बीस करोड़ लोगों को पीने का स्वच्छ पानी नहीं मिल पाना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। आजादी के वक्त भारत में पांच हजार क्यूबिक मीटर पानी प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष उपलब्ध था।

दरअसल, भारत में गहराते जल संकट के लिए काफी हद तक पानी की बर्बादी भी जिम्मेवार है। यहां जल आपूर्ति की व्यवस्था में काफी खामियां हैं। नलों के जरिए घरों तक पहुंचने वाले पानी का एक बड़ा हिस्सा रिस कर बर्बाद हो जाता है। हर शहर में फूटे हुए आपूर्ति पाइप आसानी से देखे जा सकते हैं। इस बदहाल व्यवस्था के लिए सरकार के साथ-साथ सामान्य लोग भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। एक तरफ तो सरकार पेयजल के नाम पर हर साल हजारों करोड़ रुपए का बजट बनाती है और दूसरी तरफ जमीनी स्तर पर हालात में कोई बदलाव नहीं दिखता है। सामाजिक तौर पर भी जल संरक्षण को लेकर जागरूकता का अभाव दिखता है। यह सामाजिक ताने-बाने का ही असर है कि लोग कहीं भी जल की बर्बादी को देखकर उसे सामान्य घटना मानते हुए नजरअंदाज कर देते हैं।

देश के बीस करोड़ लोगों को पीने का स्वच्छ पानी नहीं मिल पाना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। आजादी के वक्त भारत में पांच हजार क्यूबिक मीटर पानी प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष उपलब्ध था। यह अब घटकर 1800 क्यूबिक मीटर प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष हो चुका है।

विशेषज्ञों का अनुमान है कि अगर पानी की खपत और बर्बादी इसी तरह से जारी रही तो 2025 तक यह घटकर हजार क्यूबिक मीटर प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष ही रह जाएगा। उस समय तक पानी की उपलब्धता में आने वाली इस कमी की वजह से कृषि उत्पादन में तीस फीसदी की कमी आने की संभावना है। इन परिस्थितियों में देश की आर्थिक और सामाजिक स्थिति का क्या होगा, इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है।

भारत में जल संरक्षण के प्रति आज भी आम लोगों के मन में उपेक्षा का भाव बना हुआ है। साथ ही इस कार्य के लिए आवश्यक तकनीक की भी कमी है। जो तकनीक उपलब्ध है उनसे सामान्य लोग अनजान हैं। बारिश के पानी का संग्रह करके उसे उपयोग में लाना एक अच्छा विकल्प है। पर इस तरह की कोशिश काफी सीमित मात्रा में काफी छोटे स्तर पर हो रही है। यही वजह है कि देश में होने वाली बारिश के पानी का अस्सी फीसदी हिस्सा आज भी समुद्र में पहुंच जाता है।

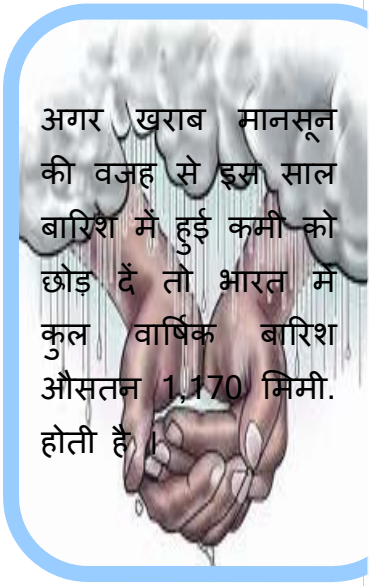

अगर खराब मानसून की वजह से इस साल बारिश में हुई कमी को छोड़ दें तो भारत में कुल वार्षिक बारिश औसतन 1,170 मिमी. होती है। अगर जल की इस विशाल मात्रा का आधा भी प्रयोग कर लिया जाए तो स्थिति में व्यापक बदलाव आना तय है। शहरी क्षेत्रों में तो पानी की कालाबाजारी जोरों पर हैं। जगह-जगह पर जल माफिया सक्रिय हो गए हैं। दिल्ली के ही एक अखबार ने कुछ समय पहले यह बात उजागर किया था यहां तो समानांतर जल बोर्ड भी चलाया जा रहा है। हैरानी की बात तो यह है कि इसके बावजूद भी पानी के काले धंधे पर अंकुश नहीं लगाया जा सका है। अहम सवाल यह है कि कैसे सामान्य तबके के लोगों तक स्वच्छ पानी पहुंचाया जाए? शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी यह एक बड़ी चुनौती है।

आबादी में अप्रत्याशित वृद्धि, बढ़ते शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और कृषि उत्पाद की बढ़ती मांग के कारण पानी की मांग पिछले कुछ सालों में स्वाभाविक रूप से बढ़ी है। इसके परिणामस्वरूप भूजल संसाधन का अत्यधिक दोहन हुआ है और इसका नतीजा हुआ कि लगातार भूजल का स्तर घटता जा रहा है। शहरी क्षेत्रों में स्थिति बेहद भयावह है। तदनुसार, वहां न केवल शीघ्रातिशीघ्र जल संसाधनों के संरक्षण की जरूरत है बल्कि प्रभावी रणनीति और प्रबंधन के जरिए तत्काल कदम उठाने की जरूरत है,

खासकर इस बात को ध्यान में रखकर कि विभिन्न प्रतियोगी क्षेत्रों में कभी भी मांग बढ़ सकती है। भविष्य में उपयोग के लिए छतों पर या सतह पर जलग्रहण बनाकर वर्षाजल संरक्षण बेहद जरूरी है । यह पानी की बढ़ती जरूरतों का खयाल रखने, मिट्टी की नमी स्तर को बढ़ाने, शहरी हरियाली को बढ़ाने, भूजल स्तर को कृत्रिम रूप से पुनर्भरण करने और भूजल की गुणवत्ता सें सुधार का काम करता है ।

भारत में जल प्रबंधन से देश का विकास

भारत में दुनिया की 16 प्रतिशत आबादी रहती हैं, लेकिन दुनिया के सिर्फ 4 प्रतिशत जल संसाधन ही भारत के पास हैं। 3290000 वर्ग किलोमीटर के भूमि क्षेत्र और एक अरब से ज्यादा की आबादी के साथ, भारत के एक बहुलवादी विविधता का चित्र है। विशाल प्राकृतिक संसाधनों के साथ संपन्न, तकनीकी और वैज्ञानिक कर्मियों का भी यह दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा समुच्चय है। भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी से वृद्धि हुई है और आर्थिक उदारीकरण ने निजी क्षेत्र की विशाल क्षमता को बढ़ावा दिया है, जो आज लगभग 75 सकल घरेलू उत्पाद (GDP) प्रतिशत के लिए योगदान देता है। मानव विकास में 80 के दशक में लगभग 26 प्रतिशत और 90 के दशक के दौरान और 24 प्रतिशत के द्वारा सुधार हुआ है । आजादी के बाद छह दशकों में भारत ने जल संसाधनों का अभूतपूर्व विकास और खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता, शहरी क्षेत्र, ऊर्जा और औद्योगिक क्षेत्रों और पीने का पानी के बुनियादी ढांचे में तेजी से विस्तार देखा है, जिसका उपयोग भारत की लगभग 85 प्रतिशत शहरी और ग्रामीण आबादी के द्वारा किया जाता हैं। भारत में राज्य सरकारों और भारत सरकार के प्रतिबद्ध और ठोस प्रयास की वजह से ग्रामीण और शहरी आबादी को सुरक्षित पेयजल को उपलब्ध करवाने में काफी सफलता हासिल की है । इस उपलब्धि ने भूजल की कमी, जल जमाव,जल गुणवत्ता गिरावट, जल प्रदूषण और बढ़ते लवणता स्तर से बड़े क्षेत्रों को प्रभावित किया है और अभी भी विभिन्न राज्यों में, ग्रामीण और शहरी भारत के 'मानव विकास सूचकांक (HDI)' में बहुत असमानता मौजूद हैं। पानी के लिए क्षेत्रीय मांगे तेजी से बढ़ रहे शहरीकरण की गति से बढ़ रही हैं, (अनुमानत: 2025 तक, देश की आबादी का 50 प्रतिशत से अधिक शहरों में रहेंगे), जनसंख्या वृद्धि, बढ़ती आय और औद्योगिक विकास,शहरी भारत तेजी से विकास की मांग के केंद्रों के रूप में उभर रहा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी से वृद्धि हुई है और आर्थिक उदारीकरण ने निजी क्षेत्र की विशाल क्षमता को बढ़ावा दिया है, जो आज लगभग 75 सकल घरेलू उत्पाद (GDP) प्रतिशत के लिए योगदान देता है।

नतीजतन, प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता गिर रही है । प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में 12वीं योजना के लिए हुई योजना आयोग की पूर्ण बैठक में दूसरे मुद्दों के साथ जल प्रबंधन पर विशेष चर्चा हुई। बैठक के बाद योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने कहा कि भू-जल कानून से लेकर दूसरे मुद्दों की व्यापक समीक्षा जरूरी है । वैद्यनाथन समिति जहां वर्तमान में भू-जल कानून की सार्थकता का अध्ययन करेगी वहीं भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन [इसरो] की मदद से पानी की उपलब्धता का विस्तृत अध्ययन होगा । मोंटेक ने कहा कि उसी आधार पर रणनीति तय होगी । सरकार यह ध्यान रखेगी कि पानी का अधिकतम उपयोग हो सके और सभी को उपलब्ध हो । पानी पर किसी का एकाधिकार न हो सके । बताते हैं कि दुरुपयोग को रोकने के लिए शुल्क लगाने पर भी विचार किया जा सकता है । हालांकि इससे पहले राज्य सरकारों से चर्चा होगी ।

यह तय है कि एआइबीपी कार्यक्रम में व्यापक बदलाव होंगे। श्री मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने कहा कि वर्तमान में इस कार्यक्रम का सही क्रियान्वयन नहीं हो रहा है। लिहाजा उसमें परिवर्तन जरूरी है । संभव है कि हर राज्य में जल नियामक प्राधिकरण बनाने की शर्त भी लगाई जाए। उन्होंने कहा कि जल प्रबंधन की व्यापक समीक्षा कर नई रणनीति तय की जाएगी ।

कुल मिलाकर, राष्ट्रीय स्तर पर, वर्तमान जल संसाधनों का अधिक से अधिक करने के लिए मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त हैं, लेकिन भविष्य के अध्ययन परियोजना है कि जल आपूर्ति की स्थिति अगले आधे सदी में अधिक कठिन हो सकती है।

जल संकट से निपटने को जल संरक्षण प्रबंधन अनिवार्य

प्रकृति का जो असंतुलन पिछले दो-तीन दशकों से देखा जा रहा है, इसके परिणामस्वरूप विश्व भर के वैज्ञानिक, जल संसाधनों व जल संरक्षण की ओर जनमानस को सचेत व सजग कर रहे हैं। नदियां, नाले, झरने, कुएं, बावड़ियां, बोर वेल प्रमुख जल संसाधन हैं। इन संसाधनों का स्रोत हिमपात और वर्षा है। बढ़ते वैश्विक तापमान के फलस्वरूप अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अल्पवृष्टि और असामयिक वृष्टि हम प्रतिवर्ष देख रहे हैं, जिसका प्रभाव हमारे जल संसाधनों पर पड़ता दिखाई दे रहा है । कुओं व बावड़ियों का मिटता अस्तित्व, नदी-नालों का घटता पानी, भू-गर्भ जल का गिरता स्तर चिंता की परिधि से निकलकर खतरे की घंटी बनता जा रहा है ।

विश्व भर में सीमेंट के अंधाधुंध प्रयोग ने धरातल के सहज अवशोषण क्षेत्र को घटाया है तथा जल बहाव, भूमि कटाव व बाढ़ों में वृद्धि की है । ऐसी स्थिति में जल संरक्षण का दायित्व मात्र वैज्ञानिकों व सरकारों तक सीमित न रहकर प्रत्येक उपभोक्ता के कंधों पर आ जाता है।

इसी दायित्व के निर्वहन के लिए हमारे पास दो विकल्प सामने आते हैं।

1. वैयक्तिक प्रयासों के अंतर्गत हर परिवार नहाने-धोने तथा अन्य रसोई उपयोग के उपरांत बेकार जाने वाले जल को पुनः उपयोगी बनाने का उपाय कर उसे उपयोग में लाए।
2. पारिवारिक स्तर पर वर्षा जल को संग्रहित कर उसका उपयोग करे।

ये दोनों ही प्रयास ग्रामीण क्षेत्रों में तो सरलता से अपनाए जा सकते हैं, परंतु शहरी क्षेत्रों में वेस्ट वाटर मैनेजमेंट की बड़ी परियोजनाएं बनाकर ही पानी को रिसाइकिल किया जा सकता है। भू-गर्भ अधिकाधिक जल अवशोषित होकर जाए, इसके लिए मैदानी भागों में नियोजित ढंग से बड़े-बड़े पोखर बनाकर तथा पहाड़ी क्षेत्रों में नालों-खड्डों में मिट्टी, पत्थर, आरसीसी के बड़े-छोटे डैम लगाकर जल बहाव रोक, भू-संरक्षण बचाव व जल भंडारण और धरातल जल शोषण क्षेत्र बढ़ाया जा सकता है। विश्व बैंक भारत सरकार द्वारा मध्य हिमालय जलागम परियोजना, राज्यों के भू-संरक्षण विभाग इस क्षेत्र में कारगर उपाय लेकर हमारे सामने हैं, परंतु जनसहयोग के बिना इन परियोजनाओं के आशातीत परिणाम ले पाना कठिन है। वृक्षारोपण इस संपूर्ण जल चक्र को बल देने वाला कारक है।

जल के प्रति चेतना जागृत न हुई, तो अवश्य ही अगले विश्व युद्ध का कारण जल ही होगा।

जल भोजन है और अग्नि भोजन का भक्षक है !
अग्नि जल में और जल अग्नि में विद्यमान है ।
- तैतरीय उपनिषद 3.8

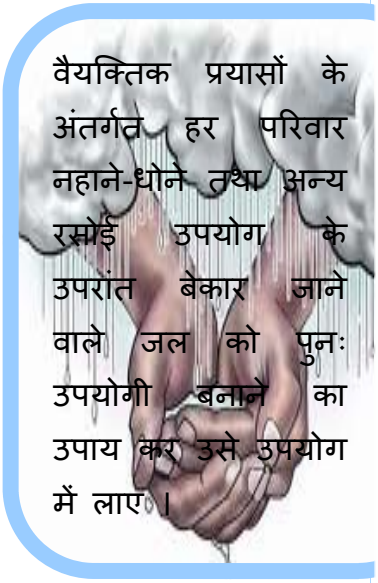

बदलता भारत

मनीष लाल, इरेडा

मैं भी गाने गा सकता हूँ, शबनम के खिलते फूलों के
मैं भी गीत सुना सकता हूँ, सावन के मस्त झूलों के
लेकिन जब घर-घर में बादल छाये घोर निराशा के
तब मैं नगमें गा रहा हूँ उम्मीदों की आशा के
सड़क पर खड़े बचपन की ये बात सुनाने आया हूँ
मैं बदलते भारत की, तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।

हरे-भरे लहराते पेड़, बन रहे बियावान हैं
महंगाई की मार से, सहमा सा हर इंसान है
हर तरफ होते गोली के शोर से
शहर बनते जा रहे कब्रिस्तान हैं
इस बदलते परिवेश का, राग सुनाने आया हूँ
मैं बदलते भारत की, तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।

हरे-भरे लहराते पेड़, बन रहे बियावान हैं महंगाई की मार से, सहमा सा हर इंसान है हर तरफ होते गोली के शोर से शहर बनते जा रहे कब्रिस्तान हैं ।

गांधी जी के सपनों का, जो राम-राज्य कहलाता है
उस भारत में सड़कों पर, छोटू चाय पहुंचाता है
कहाँ गई वो अल्हड़ मस्ती, कहाँ गया वो प्यार का रास्ता
उन हाथों से बेचते झंडे, जिन हाथों को चाहिए बस्ता
उस सोने की चिड़िया की मैं, बात बताने आया हूँ ।
मैं बदलते भारत की, तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।

कहीं बमों की गर्म हवाएं, कहीं संसद में कोहराम है
कहीं होते घोटालों से परेशान आदमी आम है
कही स्कूल की किलकारी है, कहीं सड़क पर बचपन है
कहीं चलता नहीं गुजारा, कहीं विदेशों में काला धन है
मैं सच्चाई गा-गाकर सबको बतलाने आया हूँ
मैं बदलते भारत की, तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।

करने वाले काम बहुत हैं, व्यर्थ उलझनों को छोड़ो
मुल्ला-पंड़ित तोड़ रहे हैं, तुम बस 'अपनों को जोड़ो
'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' मंत्र यही है सँवरने का
'वंदे मातरम्' गीत नहीं ये प्रश्न है जीने-मरने का
वक्त यही है सुध लेने का, ये पाठ पढ़ाने आया हूँ
मैं बदलते भारत की, तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।

हम बदलेंगे – युग बदलेगा' मंत्र यही है सँवरने का वंदे मातरम्' गीत नहीं ये प्रश्न है जीने-मरने का वक्त यही है सुध लेने का, ये पाठ पढ़ाने आया हूँ मैं बदलते भारत की, तस्वीर दिखाने लाया हूँ ।

सतरंगी चितेरे

संगीता श्रीवास्तव, इरेडा

संसर्ग और प्रेम के लिए और इस संसार के विस्तार और प्रसार के लिए तो मुझे और रंग बनाने होंगे ऐसे रंग जो अपनी एक अलग परिभाषा लिए हों जो प्रेम और सिर्फ प्रेम के अनेक रूप लिए हों बस-

सिर्फ काला और सफ़ेद, ये ही वो दो रंग थे
जो तेरे पास सृष्टि बनाने के आधार थे
काला वो जो कालिमा लिये है, जिसे कहते है
दुख, निराशा, मृत्यु अपयश और
वो सबकुछ जो नकारात्मक है ।
मगर सफेद है वो रंग, जिससे जुड़ा है,
जीवन, आशा, सुख और कीर्ति और
वो सब कुछ जो सकारात्मक है ।
पर इन रंगों से तुझे चैन ना मिला
तू सोचने लगा अगर सृष्टि बनानी है
तो किस लिए-
संसर्ग और प्रेम के लिए और
इस संसार के विस्तार और प्रसार के लिए
तो मुझे और रंग बनाने होंगे
ऐसे रंग जो अपनी एक अलग परिभाषा लिए हों
जो प्रेम और सिर्फ प्रेम के अनेक रूप लिए हों
बस-
बना डाला तूने इन्द्रधनुष
जो बरसात के बाद, सूरज और
पृथ्वी के अनुपम प्रेम को,
रंग देता है सतरंगी रंगों से
और उन्हीं सतरंगी इन्द्रधनुषी रंगों में,
हम हर पल, हर क्षण, डूबते, गहराते, इतराते रहते हैं ।
और खुशियों भरे संसार में
हर रंग को अलग-अलग तरह से
महसूस करके, जीते रहते हैं
रंग तो रंग है, मगर-

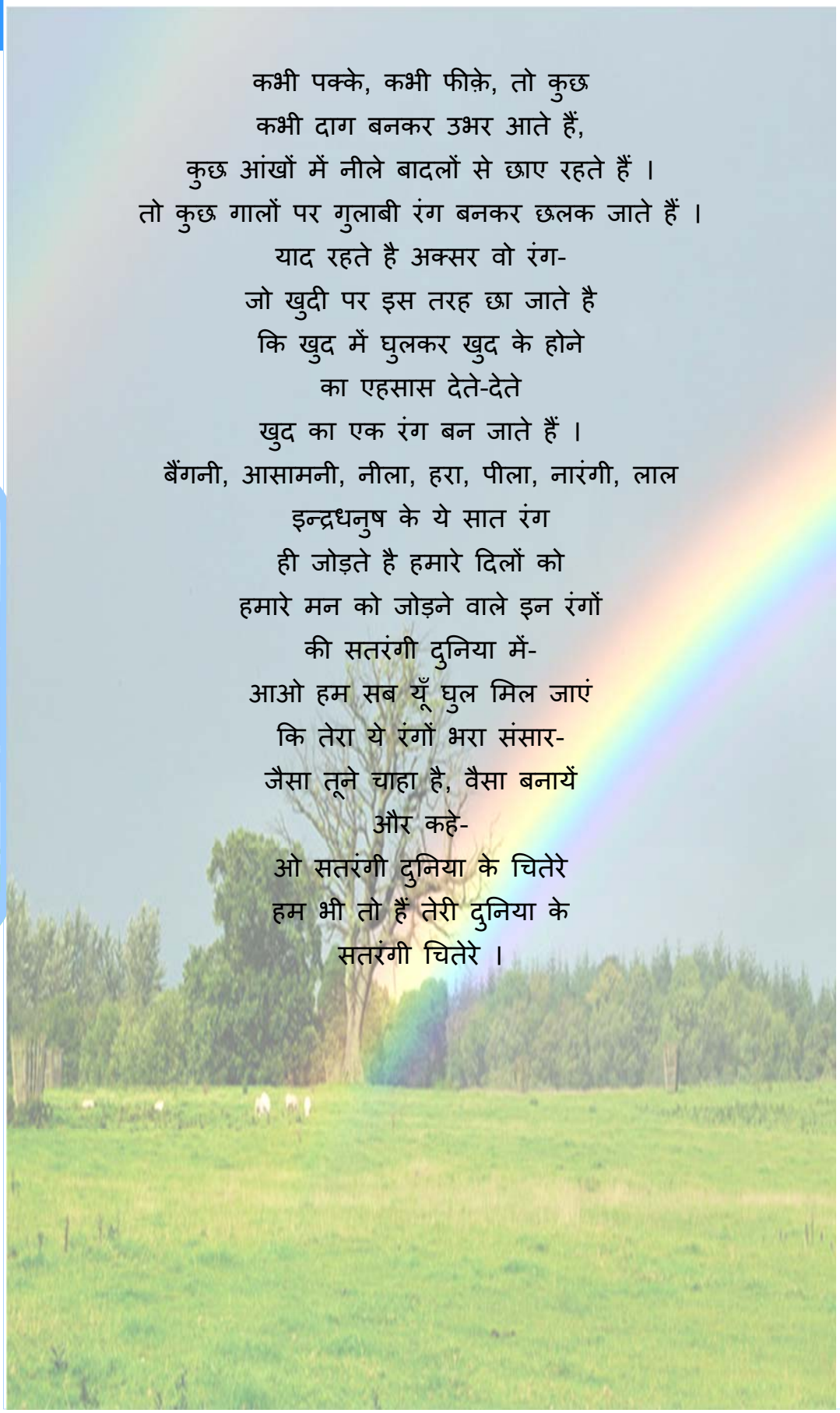

कभी पक्के, कभी फीक़े, तो कुछ
कभी दाग बनकर उभर आते हैं,
कुछ आंखों में नीले बादलों से छाए रहते हैं ।
तो कुछ गालों पर गुलाबी रंग बनकर छलक जाते हैं ।
याद रहते है अक्सर वो रंग-
जो खुदी पर इस तरह छा जाते है
कि खुद में घुलकर खुद के होने
का एहसास देते-देते
खुद का एक रंग बन जाते हैं ।
बैंगनी, आसामनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी, लाल
इन्द्रधनुष के ये सात रंग
ही जोड़ते है हमारे दिलों को
हमारे मन को जोड़ने वाले इन रंगों
की सतरंगी दुनिया में-
आओ हम सब यूँ घुल मिल जाएं
कि तेरा ये रंगों भरा संसार-
जैसा तूने चाहा है, वैसा बनायें
और कहे-
ओ सतरंगी दुनिया के चितेरे
हम भी तो हैं तेरी दुनिया के
सतरंगी चितेरे ।

आओ हम सब यूँ घुल मिल जाएं कि तेरा ये रंगों भरा संसार- जैसा तूने चाहा है, वैसा बनायें और कहे- ओ सतरंगी दुनिया के चितेरे हम भी तो हैं तेरी दुनिया के सतरंगी चितेरे ।